स्टेट इनिशिएटिव फॉर क्वॉलिटि एज्यूकेशन कार्यक्रम

आदर्श विद्यालय योजना

शिक्षक प्रशिक्षण

सत्र : 2016–17

संभागियों के लिए पठन सामग्री

हिन्दी

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद्

माध्यमिक शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
अनुलग्नक–1	भाषा शिक्षण में चुनौतियाँ, कारण व समाधान	1–2
अनुलग्नक–2	भाषा की प्रकृति	3–5
अनुलग्नक–3	की स्टेजेज हिन्दी	6–11
अनुलग्नक–4	भाषा शिक्षण के सामान्य उद्देश्य (आलेख)	12
अनुलग्नक–5	बालकेन्द्रित शिक्षण प्रक्रिया (आलेख)	13–14
अनुलग्नक–6	योजना प्रारूप	15–17
अनुलग्नक–7	भाषा शिक्षण की आरंभिक गतिविधियाँ	18–24
अनुलग्नक–8	केस स्टेडी–1	25–26
अनुलग्नक–9	'साइकिल पर थैले' कहानी से पठन की ओर.....	27–28
अनुलग्नक–10	कहानी शिक्षण कैसे?	29–30
अनुलग्नक–11	पाठ योजना का नियोजन	31–32
अनुलग्नक–12	सतत एवं व्यापक आकलन	33–35
अनुलग्नक–13	हिन्दी की विधाएँ एवं आकलन (आलेख)	36–40
अनुलग्नक–14	कार्यपत्रक नमूना : अभ्यास एवं आकलन (आलेख)	41–48
भाग–ब	प्रशिक्षण उपयोगी प्रारूप	49–54

Programme Partners

निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा विभाग
निदेशालय, प्रारंभिक शिक्षा विभाग

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद्

राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद्

एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर

बोध शिक्षा समिति

यूनिसेफ, जयपुर

मॉड्यूल निर्माण में तकनीकी सहयोग : बोध शिक्षा समिति एवं यूनिसेफ, जयपुर

स्टेट इनिशिएटिव फॉर क्वॉलिटि एज्यूकेशन–राजस्थान

आदर्श विद्यालय योजना

शिक्षक प्रशिक्षण मॉड्यूल

2016

(खण्ड : दो–द)

हिन्दी : पाठ्यक्रम, शिक्षण–अधिगम एवं आकलन

संभागियों के लिए पठन सामग्री

RCSE

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद्

माध्यमिक शिक्षा विभाग–राजस्थान सरकार

प्रशिक्षण मॉड्यूल निर्माण समूह

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद्

1. सुश्री तूलिका सैनी, उपायुक्त–एसआईक्यूई
2. सुश्री ममता दाधीच, राज्य समन्वयक, एसआईक्यूई
3. डा. गोविन्द सिंह, उपनिदेशक, प्रशिक्षण

यूनिसेफ, जयपुर

1. सुश्री सुलग्ना रॉय, शिक्षा विशेषज्ञ
2. श्री साशा प्रियो, राज्य सलाहकार–आरसीएसई

बोध शिक्षा समिति

- श्री योगेन्द्र भूषण (निदेशक बोध शिक्षा समिति) : समूह समन्वयक
- सुश्री कुसुम विष्ट, (सीनियर फैलो–हिन्दी ; ईआरसी)
- सुश्री लेखा मोहन (सीनियर फैलो–पर्यावरण अध्ययन ; ईआरसी),
- श्री राजेश कुमार शर्मा (सीनियर फैलो–गणित ; ईआरसी),
- सुश्री चेतना टण्डन (सीनियर फैलो–कला एवं संगीत ; ईआरसी)
- श्री प्रेम नारायण (बोध सलाहकार, निदेशालय माध्यमिक शिक्षा),
- सुश्री दिव्या सिंह (सीनियर फैलो–शोध ; ईआरसी)
- सुश्री नयन महरोत्रा (सीनियर फैलो–अंग्रेजी ; ईआरसी)
- श्री विनीत पंवार (सलाहकार एसआईईआरटी, उदयपुर)
- श्री उमाशंकर शर्मा (फैलो–ईआरसी)

जिला समर्थक अध्येता (डीएसएफ) – बोध एवं यूनिसेफ

गणित : • श्री धीरेन्द्र • श्री राजेश शर्मा • श्री जगदीश • श्री छोटू राम

हिन्दी : • श्री भागचन्द • सुश्री सीमा कुमावत • श्री सन्नी पाल • श्री मनिन्दर (हिन्दी)

अंग्रेजी : • श्री संजय पंडित • श्री नरेन्द्र शर्मा • सुश्री ज्योति • श्री अभिषेक (अंग्रेजी)

पर्या. अध्ययन : • श्री पंकज नोटियाल • श्री मनोज • श्री रामकिशन (पर्यावरण अध्ययन)

कला शिक्षा : • श्री अष्टम नीलकण्ठ

ग्राफ़िक्स डिज़ाइन व कम्प्यूटर कार्य :

श्री दीनदयाल शर्मा
वरिष्ठ समन्वयक, बोध
श्री के.के. चौधरी
सहवरिष्ठ समन्वयक, बोध

प्रूफ एडिटिंग (बोध) :

सुश्री चेतना टण्डन (सीनियर फैलो, ईआरसी)
सुश्री कुसुम विष्ट (सीनियर फैलो, ईआरसी)
सुश्री मीनाक्षी अग्रवाल (सीनियर फैलो, ईआरसी)
सुश्री अपूर्वा रंजन (फैलो, ईआरसी)

क्षेत्र	चुनौती का प्रकार	क्यों	समाधान हेतु गतिविधियों के नमूने
सुनना	• बच्चे आपस में बातचीत ज्यादा करते हैं अतः शिक्षक की बात को कम सुन पाते हैं। • बच्चे पाठ्य सामग्री को कम रूचि से सुनते हैं। बजाए किस्से कहानियाँ, चुटकले एवं रूचिकर प्रसंग आदि। • बच्चों में दूसरों की बातों को सुनने का धैर्य कम रहता हैं ।	• कक्षा में इस तरह की संस्कृति विकसित नहीं हैं कि उन्हें लगे अपनी बारी का इंतजार किया जाना चाहिए। • रोचक एवं ध्यानकेन्द्रण की गतिविधियों की कमी। • उपसमूहों में मिलकर साझा विचार विमर्श के साथ समझ बनाने के अवसर कम दिए जाते हैं। • शिक्षक केन्द्रित कक्षाएं अधिक संचालित होती हैं।	• कक्षा में इस तरह की गतिविधियाँ की जाए जिससे बच्चे इस तरह की संस्कृति में ढल सके। • रोचक एवं ध्यानकेन्द्रण की गतिविधियाँ की जानी चाहिए जैसे :– पपेट्स एवं चित्रों के माध्यम से या हावभाव के साथ कहानी सुनाना या खेल, बालगीत .....आदि
बोलना	• बच्चे अपनी बात को क्रमबद्ध रूप से नहीं सुना पाते हैं। • अभिव्यक्ति के दौरान आत्म विश्वास की कमी रहती है। • सीखी हुई शब्दावली का प्रयोग न करना।	• सभी को अपने विचार रखने के अवसर कम दिये जाते हैं। • प्रत्येक को बोलने के लिए प्रोत्साहित नहीं करते जो स्वयं पहल से बोलता है उसी को अवसर दिए जाते हैं । • शब्दावली प्रयोग के लिए गतिविधियों की कमी रहती है।	• सभी बच्चों को अपनी बात, राय रखने के अवसर दिये जाने चाहिए। • सीखे गये शब्दों/चीजों का कक्षा में प्रयोग करने का पर्याप्त अवसर देना। • बच्चे द्वारा राय या विचार देने के दौरान टोका टाकी एवं हतोत्साहित नहीं किया जाये। • विविध संवादात्मक गतिविधियाँ की जाये।
पठन	• बच्चे वर्णमाला नहीं सीख पाते हैं। • बच्चे किताब को अटक अटक कर पढ़ते हैं। • बच्चे किताब/ विषयवस्तु/ • पाठ्य सामग्री को स्वं पढ़कर नहीं समझ पाते हैं। • बच्चे अर्द्धाक्षर एवं संयुक्ताक्षर शब्दों को पढ़ नहीं पाते हैं। • पठन में उच्चारण अस्पष्ट होता है। • धारा प्रवाह के साथ नहीं पढ़ पाते हैं।	• यांत्रिक ढ़ंग से वर्णमाला सिखाने पर जोर रहता है। • अर्थ पूर्ण तरीके से अनुभव के जोड़ कर सिखाना नही हो पाता। • सस्वर वाचन का अभ्यास करने के अवसर कम होना । • चूंकि बच्चे शब्दों से वाक्य एवं पैराग्राफ के अर्थ को जोड़ते हुए नही पढ़ते मात्र डिकोडी करण करते हुए पढ़ते चले जाते हैं। • आरम्भिक स्तर पर ही अर्थ ग्रहण करने की गतिविधियों पर जोर नही है। • पठन पर अभ्यास कार्य कम होना। पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त अन्य संदर्भ पुस्तकों के पठन के अवसर बहुत कम होना।	• सार्थक अनुभवों को जोड़कर शब्द में आ रही ध्वनियों एवं संकेतों के बीच संबंध जोड़ कर सिखाना। • संबंधित शब्दों को खोजना एवं नवीन सृजन के अवसर देना। • सस्वर वाचन का अभ्यास करवाना एवं जटिलता के स्तर को समझना एवं शुद्ध उच्चारण में मदद करना। • पढ़ी हुई सामग्री पर स्तरानुसार पठन सामग्री उपलब्ध करना। • आरम्भ से ही पठन सामग्री का अर्थ ग्रहण करना व अपने शब्दों में अभिव्यक्ति के अवसर देना। • बच्चे को पढ़ने के लिए पर्याप्त अवसर देना।

लेखन	• लेखन में अशुद्धियाँ बहुत करते हैं, जैसे मात्रागत, संयुक्ताक्षर, अनुस्वार,अर्द्धाक्षर आदि।	• अवधारणात्मक समझ पर कार्य न हो पाना । ध्वनि एवं संकेत के बीच सह संबन्ध नहीं देख पाते । • स्वयं की लिखी सामग्री को पढ़कर स्वयं के स्तर पर सुधार करने के अवसर कम होना।	• सार्थक अनुभवों को जोड़कर शब्द में आ रही ध्वनियों एवं संकेतों के बीच संबंध जोड़ कर सिखाना। संबंधित शब्दों को खोजना एवं नवीन सृजन के अवसर देना । • स्वयं की लिखित सामग्री को स्वयं पढ़कर सुधार के अवसर देना ।
	• स्वं लेखन नहीं कर पाते जैसे; काल्पनिक एवं • सृजनात्मक...आदि	• समूह में विचार विमर्श करने के अवसर कम होना। • जिससे बच्चों की चिंतन करने एवं कल्पना करने की क्षमता का विकास नहीं हो पाता • पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों के पठन के अवसर बहुत कम होना। • विचारों को व्यवस्थित कर स्वयं लेखन की के अवसरों का अभाव।	• सामूहिक एवं उप समूहों में चिंतन एवं विश्लेषण की गतिविधियाँ पर जोर देना। • चर्चा के अवसर देना एवं सोचने को सही दिशा देना। • विभिन्न प्रकार की पुस्तकों का पठन करने के अवसर देना जिससे बच्चों को एक्सपोजर मिले एवं शब्द कोश बढ़े। • विचारों को व्यवस्थित लेखन करने की गतिविधियाँ करना। • परस्पर लिखित सामग्री पढ़ने के अवसर देना।
	• कम शब्दों में प्रश्न का जवाब लिख देते हैं। • परिवेशीय/ • मातृभाषा के शब्दों का लेखन में उपयोग करना। • कक्षा 1 से 3 तक बच्चे वाक्य विन्यास भी सही नहीं लिख पाते। • जानकारी एवं सूचनाओं के प्रश्न बच्चे लिख देते हैं लेकिन अनुमान, कल्पना एवं विचार आधारित प्रश्नों के उत्तर स्वतंत्र रूप से व्यवस्थित रूप में कम लिख पाते है। • प्रारम्भिक स्तर पर स्वं लेखन में संज्ञा का प्रयोग अधिक रहता है। अनुच्छेद बना कर लेखन कर पाना एवं सर्व नाम का उपयोग कम रहता है। • विराम चिह्न के प्रयोग में कठिनाई।	• बच्चों द्वारा प्रश्नों के उत्तर रटकर देना। • स्थानीय परिवेश/बोली का प्रभाव होना। • स्वयं द्वारा पुनः अवलोकन न होना। • स्वयं के स्तर पर विचार रख पाने की स्वतंत्रता एवं सोचने एवं चिन्तन करने को सही दिशा दे पाने की कमी। • साझा विचार विमर्श कर समझ बनाने के अवसर न दे पाना। • मौखिक संवाद द्वारा लेखन का ना होना। • वाक्य/गद्यांश में अर्थ ग्रहण की प्रक्रिया का अभाव होना।	• स्थानीय परिवेश के शब्दों से मानक हिन्दी शब्दावली पर लाने के सायास प्रयासों करना। • (शब्दों की दीवार बनानाः जिसके अंतर्गत प्रतदिन दो से चार ऐसे परिवेशीय शब्द जिनका बच्चे लेखन , पठन में ज्यादा उपयोग करते हैं, उनको उस दीवार पर लगाए गए चार्ट पर लिखना तथा उनके मानक शब्दों को भी उनके समानातर लिखना तथा प्रतिदिन उन शब्दों के दोनों रूपों का प्रयोग कक्षा में शिक्षण कार्य के दौरान वाक्य बनाकर प्रत्येक बच्चे द्वारा शिक्षक सहित करना, इसे नियमित गतिविधि के रूप में रखा जा सकता है।) • स्वयं के स्तर पर विचार रख पाने की स्वतंत्रता एवं सोचने एवं चिन्तन करने को सही दिशा दे पाना। • साझा विचार विमर्श कर समझ बनाने के अवसर उपलब्ध करवाना।

अभिव्यक्ति करने का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तथा व्यापक साधन है, **भाषा।** भाषा मूलतः ध्वनि – संकेतों की एक व्यवस्था है। यह मानव मुख से निकली अभिव्यक्ति है, यह विचारों के आदान–प्रदान करने की एक सामाजिक व्यवस्था है और इसके शब्दों के अर्थ प्रायः रूढ़ होते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि 'भावों और विचारों' की अभिव्यक्ति के लिए रूढ़ अर्थों में प्रयुक्त ध्वनि संकेतों की व्यवस्था भाषा है। भाषाएँ सामाजिक–सांस्कृतिक रूप से बदलती हैं और हमारे दैनंदिन व्यवहार से बदलती है।

भाषा को परिभाषित करते हुए **एनसाइक्लोपिडिया ब्रिटेनिका** ने स्पष्टतः उल्लेख किया है कि '' भाषा यादृच्छिक मौखिक प्रतीकों की व्यवस्था है, जिसके द्वारा मनुष्य समाज एवं संस्कृति के सदस्य होने के नाते परस्पर विचारों और कार्यों का आदान–प्रदान करते हैं।''

डॉ. भोलानाथ तिवारी द्वारा प्रस्तुत भाषा की एक और परिभाषा इससे कई अधिक विस्तृत तथा व्यापक है– ''भाषा निश्चित प्रयत्न के फलस्वरूप मनुष्य के मुख से निःसृत वह सार्थक ध्वनि–समष्टि है, जिसका विश्लेषण और अध्ययन हो सके।

- **भाषा** मनुष्य की चेतना के विकास का एक प्रबल साधन है। यह चिंतन की प्रत्यक्ष वास्तविकता है। यद्यपि चिंतन और चेतना प्रत्ययिक (Ideal) होते हैं परंतु उन्हें व्यक्त करने वाली भाषा भौतिक (materil) है। अतः विचार हमेशा शब्द में व्यक्त किए जाते हैं, इसलिए यह कहा जा सकता है कि **भाषा विचार की अभिव्यक्ति का रूप है**।
- भाषा एक विशेष संकेत प्रणाली है। प्रत्येक भाषा अलग–अलग शब्दों, अर्थात् उन पारम्परिक ध्वनि संकेतों से बनी होती है, जो विभिन्न वस्तुओं और प्रक्रियाओं के द्योतक होते हैं। भाषा का दूसरा संघटक अंग है व्याकरण के कायदे, जो शब्दों से वाक्य बनाने में मदद करते हैं। ये वाक्य ही विचार व्यक्त करने के साधन हैं।

भाषा क्या–क्या करती है ?
• सुनकर और पढ़कर समझ पाने की क्षमता का विकास करती है।
• भाषा सोचने,चीजों से जुड़ने और महसूस करने का साधन है।
• अन्य विषयों या ज्ञान के क्षेत्रों में ज्ञानार्जन की क्षमता का निर्धारण करती है।
• भाषा कल्पनाशीलता,मौलिकता एवं सौंदर्यबोध का विकास करने में मदद करती है।
• रुचियों एवं क्षमताओं के विकास करने में मदद करती है।
• भाषा स्मृति कोष का काम करती है।

इसके साथ–साथ –

- भाषा की बदौलत ही मनुष्य विगत पीढ़ियों द्वारा संचित अनुभव को इस्तेमाल कर सकता है और अपने द्वारा पहले कभी न देखी या न महसूस की गई परिघटनाओं के संग्रहित ज्ञान से लाभ उठा सकता है।
- भाषा का जन्म समाज में हुआ है यह एक सामाजिक घटना है और दो अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य पूरे करती है, चेतना की अभिव्यक्ति और सूचना के संप्रेषण का। इस तरह भाषा विविधतम विचारों की अभिव्यक्ति, लोगों की भावनाओं और अनुभवों का वर्णन,गणितीय प्रमेयों का निरुपण तथा वैज्ञानिक व तकनीकी ज्ञान की रचना करना संभव बनाती है।

ज्ञान निर्माण में भाषा की भूमिका :

ज्ञान–निर्माण और भाषा का संबंध अटूट है। भाषा के बिना ज्ञान के सृजन करने की कल्पना करना मुश्किल है। ये माना जाता है कि स्कूली शिक्षा पूरी होने तक बच्चे का भाषा–बोध और साहित्य–बोध इस सीमा तक विकसित हो जाए कि

उसमें किसी रचना के बारे में स्वतंत्र राय बनाने का आत्मविश्वास पैदा हो सके। साथियो, हमारे लिए यह जानना आवश्यक है कि ज्ञान निर्माण में भाषा क्या–क्या करने में मदद करती है? आइए, इस डायग्राम पर थोड़ा गौर करते हैं–

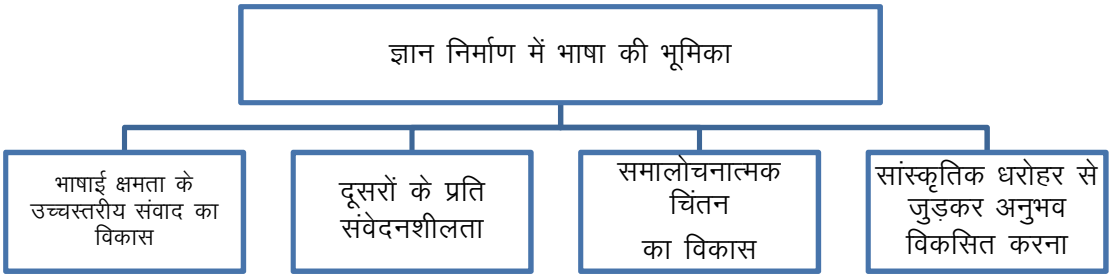

भाषा सीखना एवं भाषा सीखने की प्रक्रिया के महत्त्वपूर्ण चरण :

व्योगोत्स्की के अनुसार – ' बच्चे की भाषा समाज के संपर्क का ही परिणाम है, साथ ही बच्चा अपनी भाषा के विकास के दौरान दो तरह की बोली बोलता है: पहली आत्मकेन्द्रित और दूसरी सामाजिक।

आत्मोन्मुख भाषा के माध्यम से वह खुद से संवाद करता है, जबकि सामाजिक भाषा के माध्यम से वह शेष सारी दुनिया से संवाद स्थापित करता है।'

चॉम्स्की के अनुसार – 'भाषा सीखे जाने के क्रम में, वैज्ञानिक पड़ताल भी साथ–साथ चलती रहती है। मसलन आँकड़ों का अवलोकन,वर्गीकरण,संकल्पना–निर्माण व उनका सत्यापन अथवा असत्यता।' और **पियाजे** के निर्माणवादी दृष्टिकोण के अनुसार 'सभी ज्ञान–तंत्र सेंसरी मोटर मेकैनिज़्म के माध्यम से निर्मित होते हैं, जिसमें बच्चा आत्मसातीकरण और समायोजन के माध्यम से कई रूपरेखाएँ (Schematas) बनाता जाता है।'

इन सभी के मतों को यदि देखा जाए तो एक बात तो स्पष्ट होती है कि बच्चों में भाषा सीखने के लिए कुछ क्षमताएँ मौजूद होती हैं, जिनके प्रयोग से वह अपनी भाषा को विकसित कर पाता है। भाषा के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका समाज की होती है, और विद्यालय भी उसी समाज का अंग है, अतः स्कूली शिक्षा के प्रारंभिक चरणों में विद्यालय उसे किस प्रकार का माहौल और अवसर दे पा रहा है, जो कि बेहतर रूप से भाषाई कौशलों के विकास और उनके उपयोग में मदद करती हों।

बच्चे विद्यालय आने से पूर्व ही अपने परिवेश में उपलब्ध विभिन्न प्रकार के संकेतों को पहचानता है जिसमें अपने सहवक्ताओं से विरासत में मिले संकेतों के साथ अपने जीवन–काल में बनाए संकेत भी शामिल होते हैं। ये वे माध्यम भी हैं जिनसे अधिकतर ज्ञान का निर्माण होता है , प्रारंभिक स्तर पर बच्चे उन संकेतों से अपनी तरह से अर्थ ग्रहण करता है, उसका प्रयोग करता है और उसके अपने व्यक्तिगत अनुभव के द्वारा दूसरों तक अपनी बात को पहुँचाने का प्रयास भी करता है। यह सब प्रक्रिया वह अपने परिवेश में घटित विभिन्न प्रकार की घटनाओं का अवलोकन करते हुए सीखता है क्योंकि वह समाज में रहता है और भाषा भी एक सामाजिक प्रक्रिया है। वह जो कुछ भी सीखता है उसका आकलन भी अपने स्तर पर अपनी ही तरीके से करता है।

विचारणीय बिन्दू :

- यदि बच्चे के पास भाषा सीखने की क्षमताएँ पूर्व से विद्यमान हैं, जो उसे भाषा सीखने में मदद करती हैं और वह जब विद्यालय में आता है तो बहुत कुछ लेकर आता है , तो फिर स्कूल में भाषा शिक्षण के ऐसे कौन से कारण हैं, जिससे वह ठीक से भाषा का विस्तार नहीं कर पाता है?
- वे अपने विचारों और भावनाओं को स्पष्ट,व्यवस्थित और असरदार तरीके से अभिव्यक्त क्यों नहीं कर पाते हैं?

समेकन : उपर्युक्त गतिविधियों को सत्र संबंधी उद्देश्यों के सापेक्ष दिए गए डायग्राम के माध्यम से समेकित करते हुए प्रशिक्षक द्वारा संभागियों से इस सत्र की प्रतिपुष्टि ली जाएगी और इस बात को स्पष्ट किया जाएगा कि आगे के प्रशिक्षणों में वे आत्मविश्वास के साथ तैयार हो पाएं।

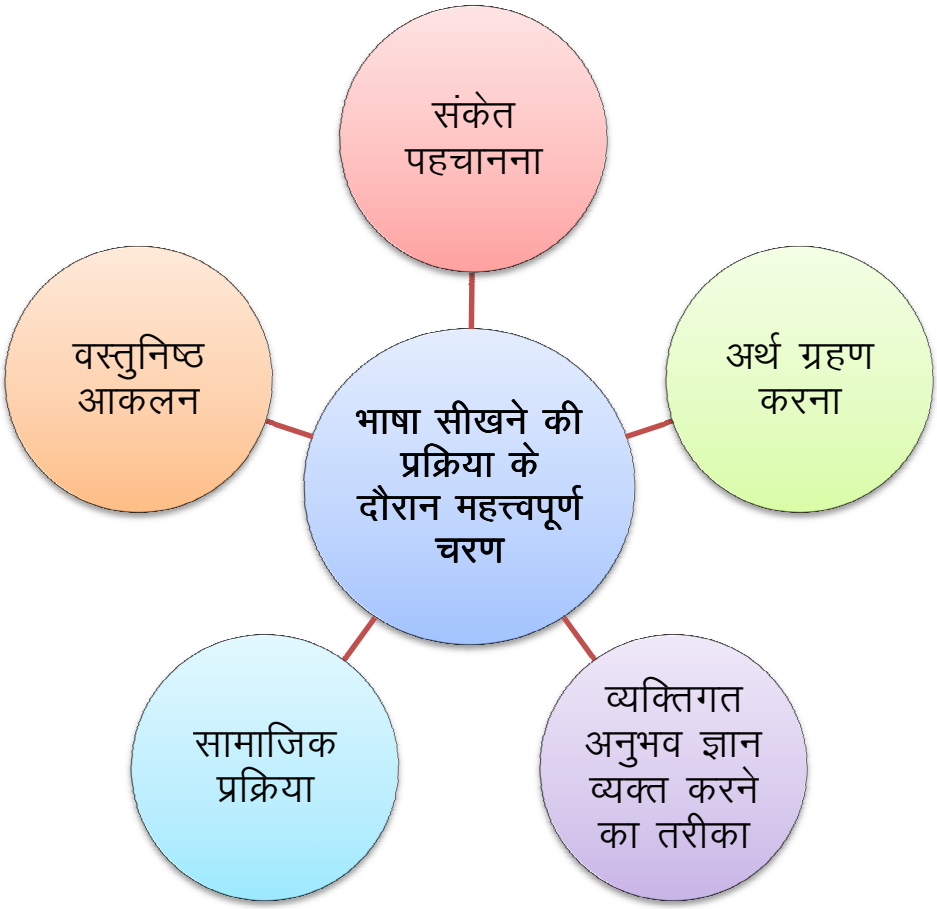
संकेत पहचानना
अर्थ ग्रहण करना
व्यक्तिगत अनुभव ज्ञान व्यक्त करने का तरीका
सामाजिक प्रक्रिया
वस्तुनिष्ठ आकलन
भाषा सीखने की प्रक्रिया के दौरान महत्त्वपूर्ण चरण

की स्टेज के अनुसार विभाजन : की स्टेज –1 (कक्षा 1 व 2) मौखिक कौशल

कथन/Statement	उद्देश्य	आकलन संकेतक	प्रस्तावित गतिविधियाँ (आकलन एवं कक्षा कक्षीय प्रक्रियाओं के लिए)
1. बच्चे कहानियों, कविताओं एवं चित्रकथात्मक/सूचनात्मक मूल पाठों में आनन्द दिखाते हैं। **2. भाषा के प्रयोग के साथ विकसित होती सीखने की योग्यता दिखाते हैं।** **3. बच्चे शब्द खेल का आनन्द लेते हैं।** **4. व्याकरण का बढ़ता हुआ ज्ञान एवं अन्य भाषा के चलन को दिखाना।** **5. मौखिक भाषा के साथ सीखने की योग्यता में वृद्धि होना।** **6. भाषा में आनन्द दिखाते हैं।**	• सुनी–पढ़ी कहानियों और कविताओं से अपने अनुभव जोड़ सकें उनके बारे में बात कर सकें। • परिवेश में उपलब्ध संदर्भों/चित्रों पर छपी हुई लिखित सामग्री से परिचित हो सकें। • घर की भाषा और स्कूल की भाषा में आपसी संबंध बनाते हुए उसे विस्तार दे सकें। • संदर्भ के अनुसार उचित शब्दों का प्रयोग करते हुए पूरे–पूरे वाक्यों में अपनी बात का रख सकें। • दूसरों की बात को सुनने में रुचि और धैर्य पैदा कर सकें और सुनी गई बात पर अपनी टिप्पणी दे सकें। • अपने विचार और अनुभव बताने की उत्सुकता बन सके।	• कविता/कहानी/विवरण को अकेले या सामूहिक रूप से सुना पाना। • सुनी/पढ़ी कविता/कहानी आदि के बारे में बात कर पाना। • सरल मौखिक निर्देशों का पालन कर पाना। • हिन्दी के शब्दों को सही ढंग से बोल पाना। • बोलते समय लिंग , वचन का सामंजस्य का ध्यान रख पाना। • दैनिक जीवन/परिचित संदर्भों/कक्षा की गतिविधियों का दो–चार वाक्यों में विवरण दे पाना। • स्वतंत्र रूप से अपनी बात को कह पाना एवं सुनी हुई बात पर अपना मत व्यक्त कर पाना। • छोटे चुटकुले, पहेलियाँ आदि पूछ पाना एवं उत्तर बता पाना।	• जैसे–जोर से पढ़ने में ध्यान देना, टेलीविज़न आदि से संबंधित कार्यक्रमों में ध्यान देना और स्वयं के द्वारा भावी घटनाओं की भविष्यवाणी करना, क्रम में छोटी कहानियों को पुनः कहना, कहानियाँ बनाना पसन्द करना,तस्वीर/चित्र के साथ कहानी बनाना...आदि। • जैसे – एक से अधिक कार्य करने लिए मौखिक निर्देशों को समझना और पुनः कहना, सूचनाओं या अनुमति लेने के लिए प्रश्न पूछना, साथियों या बड़े लोगों से प्रश्न पूछना ...। • जैसे– शब्द खेल खेलना पसन्द करना, उपयुक्त भाषा का प्रयोग करते हुए अभिनय करना, नए शब्दों का उपयोग करना एवं दोहरान करना...। • जैसे – यह पहचानने में समर्थ होना कि सम्पूर्णवाक्य क्या है और क्या नहीं यद्यपि यह नहीं बता सकते हैं क्यो?, एक भाव विकसित होना कि विद्यालय की भाषा व किताबी भाषा शायद घर की भाषा से भिन्न है। • जैसे– बातचीत और विचार–विमर्श के लिए नियमों का अनुसरण करना, अन्य लोग जो कह चुके हैं, उसे दूसरे शब्दों में कहना, कुछ बताने में भाग लेना, स्पष्टीकरण के लिए प्रश्न पूछना..। • जैसे– शब्दों से संबंधित चुटकुलों का आनन्द लेना, जल्दी–जल्दी कहे हुए वाक्य का आनन्द लेना, नए शब्द सीखने में गर्व करना, नए शब्दों का परीक्षण करना यह पूछना कि शब्द का अर्थ क्या है..

कथन / Statement	उद्देश्य	आकलन संकेतक	प्रस्तावित गतिविधियाँ (आकलन एवं कक्षा कक्षीय प्रक्रियाओं के लिए)
1. विभिन्न विधाओं से परिचित होते हैं। **2. वे इस उम्र में अर्थ निर्माण करना प्रारम्भ कर देते हैं।** **3. इस समय वे बाल साहित्य व भाषा का आनन्द लेते हैं।** **4. प्रारंभिक उभरती साक्षरता के व्यवहार को अपेक्षाकृत उच्च स्तर पर प्रदर्शित करते हैं। छपाई के बारे में (मुद्रण) अधिकांशतः या सभी अवधारणाएँ प्राप्त कर चुके होते हैं।** **5. प्रतिदिन के जीवन में छपाई / मुद्रित विषयवस्तु का प्रयोग करते हैं।** **6. संकेत लिपि कौशल यानि वर्ण एवं शब्दों को सीखने लगते हैं।**	• लिखित / मुद्रित सामग्री से रिश्ता जोड़ सकें। • चित्रों की क्रमिकता के अनुसार मौखिक रूप से कहानी / विवरण बना सकें। • सीखे गए शब्दों को चित्रों के माध्यम से स्वयं पढ़ने का प्रयास कर सकें। • चित्रों के माध्यम से शब्दों एवं उनसे संबंधित वर्णों / अक्षरों को पढ़ना सीख सकें। • पाठ्यपुस्तक एवं अन्य पुस्तकों का स्वयं पढ़ने में उपयोग कर सकें। • अनुमान से अँगुली के माध्यम से लिखित सामग्री को पढ़ने के क्रम को समझ सकें। • किताबों आदि के प्रति रुझान बन सके। • नवीन शब्दों की संरचना कर पढ़ सकें। • मात्राओं की ध्वनियों, संयुक्ताक्षर, अनुस्वार, अनुनासिक ध्वनियों को विभेदित कर सकें। • निर्देशों आदि को पढ़कर उनका पालन कर सकें।	• चित्रों एवं लिखित सामग्री युक्त कहानियों , कविताओं को चित्र की सहायता से पढ़ने का आनंद ले पाना। • चित्रों की क्रमिकता के अनुसार घटित हो रही घटना को अनुमान के आधार पर बता सकें। • बिना चित्र की सहायता से शब्दों को पहचान कर पढ़ पाना। • रचनाओं को आनंद लेकर पढ़ने का प्रयास कर पाना। • पढ़ते समय चित्र के आधार पर अनुमान लगा पाना। • वर्णाकृतियों की ध्वनि पहचान करते हुए पढ़ पाना • सरल वाक्यों को पढ़कर समझ पाना। • सीखे गए वर्णों से नवीन शब्दों का सृजन कर पाना तथा पढ़ पाना। • मात्राओं की ध्वनि एवं चिह्नों को समझते हुए पढ़ पाना। • सीखी गई मात्राओं से युक्त वाक्यों को पढ़ पाना। • सरल वाक्यों / निर्देशों / प्रश्नों को पढ़कर समझ पाना एवं स्वयं हल कर पाना।	• जैसे – कुछ छोटी कविताएँ जानना, पारम्परिक कहानियाँ जानना। • जैसे –जोर से पठन के दौरान भविष्यवाणी करना कि आगे क्या होगा या अगला शब्द या वाक्यांश कौन सा आएगा,चित्र के साथ कहानियाँ बनाना, जो कहानियाँ वह सुन चुका है उसे पुनः कह पाना, पृष्ठ–दर–पृष्ठ एक कहानी पुनः कह सकना, किताबों के बारे में अन्यों से बातें करना, लेखन में किताब के प्रति प्रतिक्रिया करना, स्वयं को एक पाठक के रूप में देखना प्रारंभ करना.....आदि। • जैसे –जोर से पढ़ी जा रही कहानियों को सुनने में आनन्द लेना, पसंदीदा कहानियों को बार–बार पढ़ना चाहना, किताबों को स्वतंत्र रूप से देखना, पढ़ने का अभिनय करना,ध्वनि एवं शब्दों के साथ खेलने में आनन्द लेना..... आदि। • जैसे – सही स्थिति में किताब को प्रयोग में लेना यानि यह जानतें हैं कि कहाँ से पठन शुरू करना है और किस दिशा में पढ़ना है, एक शब्द, दो शब्दों , एक अक्षर, दो अक्षरों को इंगित कर पाना, यह जानते हें कि छपाई पाठक की आवाजः से मिलनी चाहिए...। • जैसे –एक विशेष किताब, अभिलेख,ऑडियो–विडियो और ऐसी ही अन्य चीज़ों को स्थापित करना....। • जैसे– अधिकांश अक्षरों को पहचानना और नाम दे सकना, अनेक ऊपरी और निचले स्तर के अक्षरों को मिलाना, कुछ शब्दों को पहचानना एवं नाम देना, छपाई में अपने नाम को पहचानना, अनेक अक्षर ध्वनि सम्बन्ध को जानना (स्वर व व्यंजन दोनों।)

कथन / Statement	उद्देश्य	आकलन संकेतक	प्रस्तावित गतिविधियाँ (आकलन एवं कक्षा कक्षीय प्रक्रियाओं के लिए)
1. बच्चे लेखन के उद्देश्य जानने लगते हैं। **2. बच्चे लेखन माध्यम से सम्प्रेषण की कोशिश करने लगते हैं।** **3. पठन और लेखन को जोड़ना।** **4. अपना नाम और कुछ अक्षर जानने एवं लिखने का प्रयास करने लगते हैं।** **5. लेखन में ध्वनि विज्ञान की जागरूकता का प्रयोग करना, यानि कि लेखन से संबंधित ध्वनि / संकेत का प्रयोग करना।** **6. स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए लेखन का प्रयोग करना।** **7. लेखन प्रक्रिया से परिचित होना।** **8. लेखन में अर्थ निर्माण करना।**	• लिपि चिह्नों को देखकर और उनकी ध्वनियों को सुनकर, समझकर उनमें सहसंबंध बनाते हुए लिखना सीखना। • पढ़ी गई बातों को समझकर अपने शब्दों में लिखने का प्रयास कर सकें। • अपनी बात को लिखकर अभिव्यक्त कर सकें। • अपनी कल्पना से छोटी कविता आदि लिखने का प्रयास कर सकें। • चित्रकारी को स्वयं की अभिव्यक्ति का माध्यम बना सकें।	• चित्र के माध्यम से शब्दों को लिख पाना। • वर्णाकृतियों को पहचान पाना व लिख पाना। • सीखे गए वर्णों से नवीन शब्द बना पाना। • सीखी गई मात्राओं का प्रयोग कर शब्द लिख पाना। • सरल वाक्यों का लेखन कर पाना। • संदर्भ के अनुसार पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिख पाना। • संयुक्ताक्षर, अनुस्वार एवं अनुनासिक शब्दों को समझते हुए लिख पाना एवं वाक्यों में भी प्रयोग कर पाना। • चित्र दृश्यों / किसी विषयवस्तु के संदर्भ में लगभग 6–8 वाक्यों का सृजन कर लिख पाना।	• जैसे– यह समझना कि कागज पर निशान का कुछ मतलब होता है। जैसे – लिखने का प्रयास करने के लिए कागज़, पेन्सिल का प्रयोग करना, अक्षरों जैसी आकृतियों की श्रृंखला लिखना.। • जैसे – स्वयं के चित्र को नाम देना, यह समझना कि कहानियाँ एक व्यक्ति के द्वारा बनाई गई है जिसने कहानी सोची ओर फिर उसे लिख ओर वह भी यह कर सकते हैं, लेखन और चित्रकारी के प्रयास के साथ कहानी को बढ़ा सकना • जैसे –अपने नाम के अक्षरों को लिखना, यद्यपि आवश्यक नहीं कि सही तरह से बना पाए, कुछ सही अक्षरों को बनाना, कुछ विराम चिह्नों का प्रयोग करना....। • जैसे–एक अक्षर ध्वनि दे सकते हैं तथा अक्षर ध्वनि से प्रारम्भ होने वाले एक शब्द कह सकना। • जैसे–लेखन अभ्यास में रुचि दिखाना, अक्सर किताब से पसंदीदा कहानियों की नकल के द्वारा, लेखन को अन्यों के साथ बाँटना, दूसरों के लेखन को पढ़ने का प्रयास करना। • जैसे–मार्गदर्शन के साथ प्रक्रिया के चरणों को उपयुक्त रूप से प्रयोग करना, यह समझना कि जो वह पढ़ रे हैं उसका लेखन किसी प्रकार की प्रकिया से गुजरा है। • जैसे–पठन के प्रति प्रतिक्रिया देना, कथात्मक व व्याख्यात्मक दोनों अंशों को ध्यान से लिखना, व्यक्तिगत घटनाओं एवं भावनाओं को • अभिव्यक्त करना।

कथन/Statement	उद्देश्य	आकलन संकेतक	प्रस्तावित गतिविधियाँ (आकलन एवं कक्षा कक्षीय प्रक्रियाओं के लिए)
1. विद्यार्थी का मानक हिन्दी का प्रयोग विकसित होना जारी रहता है। **2. भाषा के साथ सीखने की योग्यता में वृद्धि होना।** **3. शब्दों में आनन्द दिखाना।** **4. मौखिक और सुनने का शब्द भंडार भाषा में हुई वृद्धि और आनन्द को प्रतिबिम्बित करता है।**	• दूसरों की बातों को ध्यान व धैर्य से सुन सकें। • अपनी बात को आत्म विश्वास से कह सकें। • दूसरों की बात समझकर अपने शब्दों में कह सकें। • • दूसरे के विचारों को सुन व समझ सकें । • दूसरों के विचारों पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकें। • कहानी/कविता/विरण आदि सहज रचनाओं को ध्यान व धैर्य से सुन सकें व सुना सकें। • स्वतंत्र एवं सृजनात्मक रूप से अभिव्यक्त कर सकें।	• दूसरों द्वारा कही जा रही बात को ध्यान से सुन पाना। • दूसरों की बात को सुनकर अपनी प्रतिक्रिया कर पाना। • अपने परिवेश से संबंधित घटनाओं आदि के बारे में दिलचस्पी व आत्मविश्वास से कह पाना। • भाषा की बारीकियों पर ध्यान देते हुए अपनी भाषा गढ़ पाना या उनका प्रयोग कर पाना। • चित्रों और अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर अनुमान लगाते हुए रचनाओं पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर पाना। • अपने आसपास नजऋर आने वाली प्रिंट सामग्री पर ध्यान देते हुए उस पर बातचीत कर सकें।	• जैसे – अलग बोली/भाषा का वक्ता है तो, दो भाषाओं के बीच बदलाव करना सीखना, बोलते समय स्वयं सुधार करना, बढ़े हुए शब्द भंडार का प्रयोग करना, कक्षा में अपरिचित शब्दों के अर्थ पूछना। बिना आलोचना के अन्यों से भाषा के विविध प्रयोगों और किस्मों को स्वीकार करना। • जैसे –सहपाठियों को सुनना और जो अन्य कह चुके हैं उसे दूसरे शब्दों में कहना, सहपाठियों के साथ सहयोगी कार्यों में रुचि दिखाना,विचार–विमर्श में भाग लेना, मौखिक प्रश्नों की योजना बनाना और पूछना, (एक विचार का प्रयोग करते हैं जो वक्ता द्वारा अभिव्यक्त किया गया है, उसके संदर्भ में), बिना लिपि के लिखित नोट्स का प्रयोग करते हुए समूह के सामने बोलना। • जैसे –शब्दों पर आधारित खेल से संबंधित चुटकुले बनाना, शब्दों के इतिहास में रुचि दिखाना, बेतुकी कविताओं का आनन्द लेना, स्वयं का शब्दकोष बनाने में आनन्द लेना। • जैसे –नए शब्द भंडार का प्रयोग करना, पहेलियाँ और चुटकुले सुनने व कहने में आनन्द लेना, भाषा की बारीकियों पर ध्यान देना उसी सराहना करना तथा अपनी भाषा गढ़ना और उसका इस्तेमाल करना।

कथन/Statement	उद्देश्य	आकलन संकेतक	प्रस्तावित गतिविधियाँ (आकलन एवं कक्षा कक्षीय प्रक्रियाओं के लिए)
1. अक्षरों एवं अनेक दृश्य चित्रों को जानते हैं। **2. शब्दों के उच्चारण को निर्धारित करने के लिए ध्वनि संरचनात्मक तत्व का प्रयोग करते हैं।** **3. शब्द अर्थ निर्धारित करने एवं शब्द भंडार का निर्माण करने के लिए संदर्भ का प्रयोग करते हैं।** **4. एक किस्म की सामग्री में अबाध भाषण निर्माण और समझ प्रदर्शित करते हैं।** **5. समझ और अर्थ निर्माण बढ़ रहा होता है।** **6. अनेक प्रकार के उद्देश्यों के लिए पढ़ते हैं।** **7. अन्वेषणात्मक साधन व कौशलों की सहायता से खोज करना प्रारम्भ करते हैं।**	• विषय – सामग्री के माध्यम से नए शब्द जान सकें और उनके अर्थ सीख सकें। • पठन के प्रति ललक पैदा हो सके। • पठन के द्वारा ज्ञानार्जन एवं आनंद का अनुभव कर सकें। • नए शब्दों को शब्दकोश के माध्यम से खोज सकें। • पुस्तकालय आदि विभिन्न स्रोतों से अपनी पसंद की किताबें पढ़ सकें।	• पढ़ने के प्रति उत्सुक होना। • रचनाओं को आनंद व आत्मविश्वास के साथ पढ़ पाना। • चित्र और संदर्भ के अनुसार अर्थ का अनुमान लगा पाना। • विभिन्न प्रकार की कहानी, कविता आदि रचनाओं को समझकर पढ पाना। • विभिन्न उद्देश्यों के लिए पढ़ पाना।(सूचना व जानकारी प्राप्त करने हेतु) • शब्दों के अर्थों को जानने के लिए शब्दकोष का इस्तेमाल कर पाना। • अपनी पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त पुस्तकों को पढ़ पाना।	• जैसे – बिना पूर्व नियोजित क्रम में सभी अक्षरों को पहचानना एवं नाम दे सकना, देखते ही शब्दों को पहचानना व नाम देना। • जैसे – अपरिचित शब्दों को पहचानने के लिए उपयुकत योजना व कौशलों का चयन करना। • जैसे – दृश्यमान करना, भविष्यवाणी करना, महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ पहचानना, स्वयं प्रश्न पूछना, सारांश करना और मूल्यांकन करना। • जैसे – परिचित कहानियाँ पढ़ना एवं पुनः कहना, अपना लेखन पढ़ना, अपरिचित मूल पाठ पढ़ना एवं पुनः कहना, पढ़ते समय स्वयं में सुधार करना, उच्चारण व अर्थों के लिए शब्दकोष का प्रयोग करना। • जैसे – जोखिम लेने के इच्छुक होना, खाली समय के दौरान पढ़ने को चुनना, स्वयं को पाठक के रूप में देखना, अन्यों को पढ़ना पसन्द करना। • जैसे – कहानी के अर्थ के स्तरों की प्रशंसा करना, लेखन, चित्रकारी और विधाओं में बढ़ती रुचि रखना, पढ़ने के लिए स्वयं के उद्देश्यों के बारे में जागरूक होना, व्याख्यात्मक मूल पाठ में मूल पाठ की संरचना को समझना शुरु करना, सूचना के लिए अनेक प्रकार के छपाई स्रोतों का प्रयोग करना, एक से अधिक स्रोतों से सूचना संश्लेषित करना। • जैसे – शब्दार्थ सूची,विषयवस्तु की तालिका,शब्दकोष,शुरूआती विश्वकोष और पुस्तकालय का प्रयोग करना। • जैसे– अनेक प्रकार की विधाओं को पढ़ने में आनन्द लेना, शान्ति से पढ़ने को प्रमुखता देना, महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ पहचानना, स्वयं प्रश्न पूछना, निगरानी करना, संश्लेषित करना और मूल्यांकन करने के प्रयोग में वृद्धि जारी रखना।

कथन/Statement	उद्देश्य	आकलन संकेतक	प्रस्तावित गतिविधियाँ (आकलन एवं कक्षा कक्षीय प्रक्रियाओं के लिए)
1. विभिन्न प्रकार के सामान्य लेखन व्यवहारों को प्रदर्शित करते हैं। **2. भाषा विज्ञान और लेखन के तरीके के प्रयोग में वृद्धि करते हैं।** **3. लेखन प्रक्रिया का प्रयोग करते हैं।** **4. पठन और लेखन को जोड़ते हैं।**	• मनपसंद विषय का चुनाव करके लिख सकें। • दिए गए विषयों पर लिख सकें। • अपनी बात व अपने भावों को अपनी भाषा में लिख सकें। • भाषा के सौंदर्य की सराहना करने की योग्यता का विकास हो सके। • उत्साही पाठक एवं सृजनशील लेखन की दिशा की ओर बढ़ सकें। • लेखन की भिन्न –भिन्न विधाओं से परिचित हो सकें। • पढ़ी/सुनी या देखी घटनाओं पर लिखित रूप से अपनी राय व्यक्त कर सकें। • अपनी कल्पना से कविता/कहानी आदि की रचना कर सकें।	• लिखते समय अपनी ओर से कुछ नए शब्दों को गढ़ने का प्रयास कर पाना। • सुनी व देखी बातों को अपने शब्दों में लिख पाना। • विभिन्न उद्देश्यों के लिए – सूचना, कार्यक्रम की रिपोर्ट ... लिख पाना। • अपनी कल्पना से कहानी, कविता, पत्र आदि लिख पाना।	• जैसे – लेखन का आनन्द लेना, स्वयं के लेखन के बारे में आशवस्त होना, दूसरों के साथ स्वाभाविक रूप से संप्रेषण करना, दूसरों के लेखन को पढ़ने का प्रयास करना, विभिन्न उद्देश्यों के लिए विभिन्न प्रकार के आकारों में लिखना। • जैसे – अधिकांशतः पारम्परिक रूप से अक्षर बनाना, ध्वनि विधा की जागरूकता का बढ़ा हुआ प्रयोग, बढ़ी हुई दृश्य स्मृति और वर्तनी के साथ देखना, जब पारम्परिक वर्तनी ज्ञात नहीं होती है तो ध्वनि/संकेत के सम्बन्ध के ज्ञान का प्रयोग करते हुए वर्तनी का आविष्कार करना, वर्तनी का तरीका जो ध्वनि विद्या ज्ञान प्रतिबिम्बित करता हे उसे याद करना प्रारंभ करना, यदि लेखन प्रकाशित किया जाता है तो वर्तनी व परिपाटी में कांटछांट करना व ठीक करना,स्वयं के लेखन में गैर मानक व व्याकरण को पहचानना, शब्द संसाधन का प्रयोग करना • जैसे – लेखन प्रक्रिया के सभी चरणों के उद्देश्यों को समझना, लेखन प्रक्रिया का सामूहिक व स्वतंत्र रूप से प्रयोग करना,दूसरों के लेखन को पढ़ना और सुनना और कहानी के हिस्सों या मूल पाठ की संरचना से संबंधित सकारात्मक टिप्पणी करना। • जैसे – अपने लेखन में कथात्मक लेखन के तत्व जैसे बागवानी, विषय, साहित्यिक तकनीक,शैली, मुहावरे आदि का प्रयोग करना, व्याख्यात्मक लेखन में सूचनाएँ व्यवस्थित करने के लिए विभिन्न मूल पाठ संरचना का प्रयोग करना, कविताओं की सराहना करना उन्हें लिखने का प्रयास करना।

बहुत लंबे समय से हम भाषा शिक्षण के उद्देश्य को महज सुनने–बोलने–पढ़ने–लिखने के मद्देनज़र देखते रहे हैं। आखिर जब हम बोल रहे होते हैं तभी सुन भी रहे होते हैं और जब लिख रहे होते हैं तभी पढ़ भी रहे होते हैं। साथ ही कई परिस्थितियाँ ऐसी होती हैं जिसमें हमारी भाषाई क्षमता के सभी पहलू और संज्ञानात्मक योग्यताएँ एक साथ काम कर रही होती हैं।

- **जो कुछ वह सुनते हैं उसे समझने की दक्षता** : उसमें गैर शाब्दिक संकेतों के द्वारा सुनकर और समझकर संबंध जोड़ने और अनुमान लगाने की कुशलता होनी चाहिए।
- **समझकर पढ़ना यानि कि पढ़ने का विकास एकरेखीय ढंग से न हो वरन् बच्चे आगे–पीछे के संदर्भ में पढ़कर अर्थग्रहण कर पाएँ** : उसे विभिन्न व्याकरण सम्मत, अर्थगत और लिपि संकेतों के प्रयोग द्वारा आरेखित तरीके से संबंधित विषयवस्तु से पठन की आदत विकसित करनी चाहिए तथा संबंधित विषयवस्तु को अपने पिछले ज्ञान के साथ जोड़कर निष्कर्षों द्वारा अर्थ निर्माण एवं पठन के लिए आत्मविश्वास विकसित करना तथा विवेचनात्मक दृष्टिकोण के साथ पढ़ते समय प्रश्न भी सामने रखने चाहिए। वास्तव में पढ़ना पाठ के साथ संवाद करना है, अपने अनुभवों व सैद्धांतिक संरचना के साँचे में पाठ को ढालना है।
- **सहज अभिव्यक्ति :** उसे विभिन्न परिस्थितियों में अपने संप्रेषणात्मक कौशलों को प्रयोग में लाने में समर्थ होना चाहिए। वह तार्किक, विश्लेषणात्मक तथा रचनात्मक ढंग से परिचर्चा में शामिल हो सके।
- **सुसंगत लेखन** : लेखन एक यांत्रिक कौशल नहीं है। इसमें विभिन्न संबद्ध युक्तियाँ अर्थात् तत्संबंधी विषयों के द्वारा उस विषय को संयोजित करने, पर्यायवाची इत्यादि के प्रयोग द्वारा विचारों को सुसंगत ढंग से संयोजित करने की योग्यता के साथ–साथ व्याकरण, शब्द–ज्ञान, विषय, विराम–चिह्नों आदि पर पर्याप्त नियंत्रण इत्यादि कौशल सम्मिलित हैं। बच्चों में अपने विचार सहज, व्यवस्थित ढंग से प्रकट करने एवं अपने लिए विषय का चयन करने का आत्मविश्वास विकसित करना चाहिए।
- **'विभिन्न प्रयुक्तियों** (प्रयोग होने वाली) **पर अधिकार' (विभिन्न रजिस्टरों पर नियंत्रण**) भाषा का प्रयोग कभी भी एक तरह से नहीं होता है। इसके असंख्य प्रकार, अर्थ भेद व रंग होते हैं जो विभिन्न परिस्थितियों और विभिन्न क्षेत्रों के अनुसार होते हैं। एक विद्यार्थी शब्द/वाक्य भंडार का एक अंश होना चाहिए। विद्यालय के विषयों के अतिरिक्त विद्यार्थी को विभिन्न प्रयोजनों जैसे–संगीत, खेलकूद, फिल्म, बागवानी, निर्माण कार्य, पाककला आदि में प्रयोग की जाने वाली विभिन्न भाषाओं को समझने और उनके प्रयोग में भी दक्ष होना चाहिए।
- **भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन** : कराए जाने वाले कार्य इस प्रकार से होने चाहिए कि उससे बच्चा वैज्ञानिक प्रक्रिया के तमाम अवयवों जैसे– आँकड़ों का संकलन, आँकड़ों का अवलोकन और उनकी समानताओं और विभिन्नताओं के आधार पर उनका वर्गीकरण एवं परिकल्पना करने, आदि के अनुसार अग्रसर हो। इस प्रकार से बच्चे की संज्ञानात्मक योग्यताओं को विकसित करने में भाषा विज्ञान के ये उपकरण महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। इससे व्याकरण के मानक नियमों को बेहतर ढंग से सीखा जा सकेगा।
- **सृजनात्मकता** : भाषा की कक्षा में प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी कल्पना और सृजनात्मकता विकसित करने के लिए पर्याप्त अवसर मिलना चाहिए।
- **संवेदनशीलता** : भाषा की कक्षा द्वारा विद्यार्थियों को हमारी समृद्ध संस्कृति विकसित करने एवं समकालीन जीवन के विभिन्न पहलुओं से अवगत करवाने के बेहतर अवसर उपलब्ध होते हैं।

बच्चे स्वाभाविक रूप से सीखते हैं। वे अपने आस–पास की दुनिया से बहुत ही सक्रिय रूप से जुड़े होते हैं। वे खोज–बीन करते हैं, प्रतिक्रिया करते हैं, चीज़ों के साथ कार्य करते हैं, चीज़ें बनाते हैं व अर्थ गढ़ते हैं। समाज के साथ अन्तःक्रिया करके अपना ज्ञान निर्माण करते हैं। संस्था के रूप में विद्यालय को भी विद्यार्थियों को स्वयं के बारे में सीखने और दूसरों व समाज के बारे में जानने के नए अवसर प्रदान करना चाहिए, ताकि वे सामाजिक ज्ञान/विरासत के साथ जुड़ पाएँ (चाहे उन्होंने किसी भी परिवार या समुदाय में जन्म लिया हो)। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा 2005 ने सार्थक अनुभव देने, विद्यालय ज्ञान को परिवेश से जोड़ने तथा समाहित करने वाली शिक्षा प्रदान करने पर ज़ोर दिया है। इसमें बाल–केन्दित शिक्षण पद्धति को सिखाने के मुख्य तरीके के रूप में देखा गया है।

विद्यार्थियों के संदर्भ में

- इसमें शिक्षकों के द्वारा यह मानना सबसे महत्त्वपूर्ण है कि ***सभी बच्चों में सीखने की नैसर्गिक क्षमता होती है, व सभी बच्चों को सीखने में मदद करना हमारा दायित्व है।***
- बच्चों को खुद कर के सीखने व उन्हें पहल करने के अवसर मिलते हैं।
- विद्यालय का शैक्षिक वातावरण ऐसा हो जिसमें बच्चे स्वयं की आवाज ढूँढें, अपनी उत्सुकता का पोषण करें सवाल पूछें, जाँचें परखें और अपने अनुभवों को विद्यालय में प्राप्त विशिष्टताओं को ज्ञान के साथ जोड़कर देख सके और स्वयं ज्ञान निर्माण करें।
- इसके लिए पाठ्यक्रमणीय उद्देश्यों, पढ़ाने के तरीकों, पाठ्यपुस्तकों, शैक्षणिक सामग्री व योजना तथा मूल्यांकन की प्रक्रिया में बदलाव लाने की आवश्यकता है।

सीखने–सिखाने के तरीके

- बाल–केन्द्रित कक्षाओं में बच्चों को करके व मिल कर सीखने पर आधारित शिक्षण योजना बच्चों की रुचियों को ध्यान में रख कर बनाई जाती है।
- ऐसे में बच्चों की कार्य में संलग्नता बहुत अधिक होती है व सीखने में वे सक्रिय भूमिका निभा रहे होते हैं।
- कक्षाएं व विद्यालय सीखने के लिए उपयुक्त व समग्र होते हैं, जिसमें बच्चों की अभिरुचियों को सीखने–सिखाने व पूरे कार्य के मध्य में रखा जाता है।
- बच्चों को प्रश्न पूछने, अपने सीखने पर चिन्तन करने, सहपाठियों से चर्चा करने, सीखे हुए को वास्तविक जीवन में प्रयोग करने व नये अनुभव लेने हेतु भरपूर अवसर मिलते रहने चाहिए।

शिक्षक–विद्यार्थी के बीच अन्तःसंबंध

- शिक्षक बच्चों के सीखने के ऐसे अवसर प्रदान करे जिससे वे नए अनुभव व अवधारणाओं को अपने पहले के अनुभवों व ज्ञान से जोड़ कर देख पाएं।
- नया जानने के बारे में जिज्ञासु रहें व शिक्षक के साथ मिलकर नया सीखें तथा अपनी जिज्ञासाओं को सशक्त कर पाएं।
- शिक्षक व विद्यार्थी के मध्य प्यार, सम्मान व सहकार का सम्बन्ध हो।

वस्तुनिष्ठ आकलन

- बाल–केन्द्रित शिक्षण का एक मुख्य अंग सतत् व समग्र आकलन प्रक्रिया है।
- इसमें आकलन सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के अभिन्न अंग हैं व आकलन का प्रयोग बच्चों की आवश्यकताओं को जानने व उसके अनुरूप मदद सुनिश्चित करने को माना गया है।
- वस्तुनिष्ठता हेतु अलग–अलग उपकरणों का प्रयोग व बच्चों द्वारा स्वयं का आकलन कर शिक्षक को फीडबैक देने जैसे पक्ष भी सम्मिलित हैं।
- इसमें आकलन को शिक्षक व बच्चों, दोनों के लिए फीडबैक के रूप में देखा गया है।

शिक्षक की तैयारी

- बाल–केन्द्रित शिक्षण की विधियाँ व तरीकों के माध्यम से बच्चों को मिलकर सीखने का अवसर मिलना चाहिए।
- बाल–केन्द्रित शिक्षण विधियों को प्रयोग में लेने हेतु यह आवश्यक है कि शिक्षक पूर्व तैयारी, शिक्षण सामग्री व योजना सहित कक्षा में प्रवेश करे।
- योजना शिक्षक को काम करने का मार्ग दर्शन देती है व बच्चों को क्या व कैसे सिखाया जाये, इसके चिन्तन को प्रेरित करती है।
- आवश्यकता के अनुसार शैक्षिक तैयारी से बच्चे अधिक रूचि से सीखते हैं। योजना का यह पक्ष भी महत्त्वपूर्ण है कि प्रत्येक बच्चे के सीखने की समीक्षा की जाये और उसके अनुसार आगे की तैयारी करें।
- बिना समीक्षा के बच्चों के सीखने का पता न चलने की संभावना बनी रहती है।

ज्ञान निर्माण के संदर्भ में

- सभी बच्चे स्वभाव से ही सीखने के लिए उत्सुक होते हैं व उनमें सीखने की प्राकृतिक क्षमता होती है। अर्थ निकालना, अमूर्त सोच की क्षमता विकसित करना, विवेचना व कार्य, अधिगम की प्रक्रिया के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पहलू हैं।
- बच्चे व्यक्तिगत स्तर पर एवं दूसरों से भिन्न तरीकों से सीखते हैं– जैसे–अनुभव के माध्यम से स्वयं चीज़ें करने व बनाने से, प्रयोग करने, पढ़ने व विमर्श करने, पूछने, सुनने उस पर मनन करने से तथा गतिविधि या लेखन के ज़रिए अभिव्यक्त करने से।
- यह आवश्यक है कि बच्चे सिर्फ रटें नहीं बल्कि अर्जित किए हुए ज्ञान को अपने जीवन व आस–पास के वातावरण से जोड़ कर देखें।
- बच्चे रट कर याद किये तथ्यों को भूल जाते हैं, इसलिए सीखने की एक उचित गति होनी चाहिए ताकि विद्यार्थी समझते हुए आत्मसात कर सकें। सीखने में विविधता व चुनौती होनी चाहिए ताकि बच्चे उसमें रुचि लें व व्यस्त रहें।
- सीखने में नीरसता आना व अरूचि पैदा होना इस बात का संकेत है कि कार्य अब यांत्रिक रूप से किया जा रहा है और उसका ज्ञान निर्माण से कोई संबंध नहीं है। ऐसे में उस सीखने का संज्ञानात्मक मूल्य खत्म हो जाता है।
- सीखने में बच्चे की शिक्षक/अधिक सक्षम लोगों के साथ संवाद व अन्तःक्रिया बहुत महत्त्वपूर्ण है।

उक्त समेकन को पीपीटी के द्वारा समेकित करते हुए समूह में आपसी चर्चा/संवाद का अवसर दिया जाये और एक बालकेन्द्रित कक्षा की कल्पना की जाये।

प्रथम चरण : सम्पूर्ण कक्षा शिक्षण योजना

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के तहत अध्यापक योजना डायरी में नीहित पाक्षिक योजना के लिए निर्धारित योजना प्रारुप के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के बिन्दुओं का समावेश किया गया है, जिनका आशय निम्न प्रकार है –

- कक्षानुरूप समान कार्य :– कक्षानुरूप कार्य करते हुए मिलकर सीखना।
- पाठ/थीम/अवधारणा/घटक।

सभी बच्चे कक्षानुरूप शिक्षण योजना की पूर्व मान्यता

- हम तब सीखते हैं जब आगे के ज्ञान से जुडने का परस्पर अवसर मिल पाता है।
- बच्चे आपस में मिलकर सीखते हैं।
- बच्चे स्तर के अनुसार त्वरित गति से सीखते हैं।
- बहुत ज्यादा स्तर भेद करने से बच्चे हतोत्साहित होते हैं।
- सभी बच्चे उम्र के अनुसार कुछ क्षमताएँ अर्जित कर लेते हैं।
- हमेशा समूह बनाकर एवं व्यक्तिगत कार्य करवाना सम्भव नहीं है, यानि अवधारणा या गतिविधि के आधार पर निर्धारित होता है कि उसके अंतर्गत सामूहिक/उपसमूह या व्यक्तिगत कार्य किस प्रकार से ठीक से करवाया जा सकता है।

सामूहिक कार्य	समूह कार्य	व्यक्तिगत कार्य
• सभी बच्चे एक समान कार्य। • संदर्भ पूर्व ज्ञान एवं पाठ या थीम की भूमिका पर बच्चों के साथ कार्य।	• मिश्रित समान कार्य। • वृहद कार्य के विभाजन स्वरूप समान कार्य। • विभिन्न टास्क आधारित कार्य।	• समान समरूप व्यक्तिगत कार्य। • पीछे चल रहे बच्चे के लिए प्रस्तुतीकरण एवं सरल प्रक्रिया। • अवधारणा का प्रारंभिक कार्य। • अभ्यास या पुनरावृत्ति कार्य।

कक्षानुरूप एवं कक्षास्तर से नीचे की योजना की पूर्व मान्यता

- अपने स्तर से सीखने पर विशेष मदद की जरूरत होती है।
- पीछे चलने वाले बच्चों को विशेष मदद की जरूरत होती है।
- कक्षा स्तर पर चल रहे बच्चों को स्वयं ज्ञान सृजन का अवसर मिलना चाहिए।
- त्वरित गति से सीखना।
- व्यक्तिगत ध्यान द्वारा त्वरित गति से सीखना

द्वितीय चरण : कक्षानुरूप एवं कक्षास्तर से नीचे की योजना

कक्षानुरूप स्तर	कक्षा से नीचे का स्तर
• प्रथम समूह– नामांकित कक्षानुरूप स्तर। • कक्षा पाठ्यक्रम,विषयवस्तु के अनुसार कार्य। • कक्षा स्तर के आकलन सूचकों के अनुसार। • इसमें भी सामूहिक, उपसमूह एवं व्यक्तिगत कार्य हो सकते हैं। (गतिविधि की प्रकृति के अनुरुप)	• द्वितीय समूह– कक्षा स्तर से नीचे के बच्चे। • कक्षा स्तर से पीछे विभिन्न स्तरों पर उपसमूह कार्य। • स्तर अनुसार कार्य। • स्तर अनुसार व्यक्तिगत कार्य। • मूल क्षमताओं के अनुसार कार्य। • उपचारात्मक शिक्षण पर विशेष जोर देना। • सीखने की गति को बढ़ाने हेतु त्वरित शिक्षण।

सतत आकलन योजना

सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के दौरान बच्चे के संज्ञानात्मक व गैर संज्ञानात्मक पक्षों के सापेक्ष सीखने को सुनिश्चित करने की प्रक्रिया सतत आकलन योजना है।

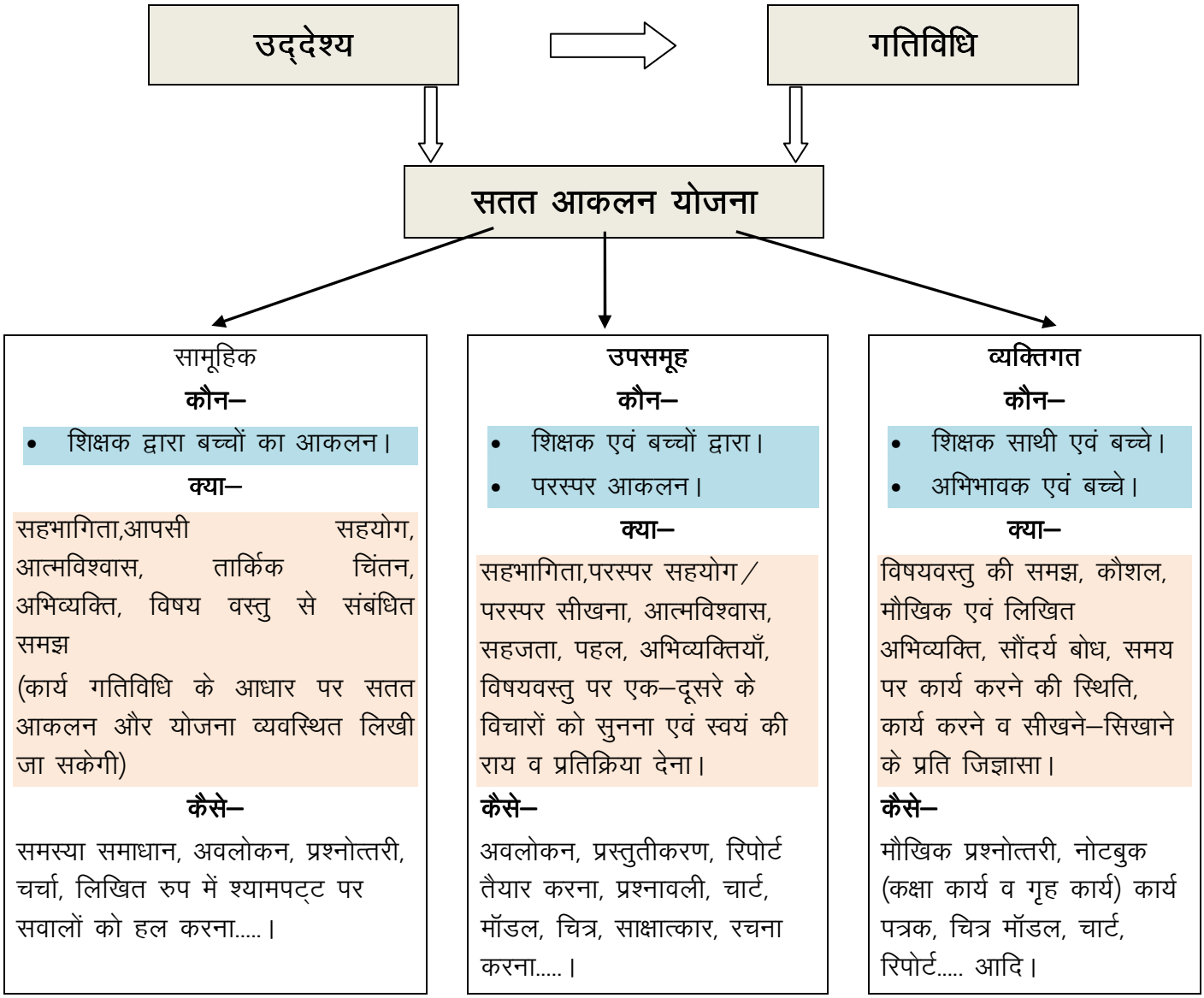

समीक्षा की प्रक्रिया

समीक्षा– प्रस्तावित शिक्षण कार्य योजना की क्रियान्विति की स्थिति को सतत रूप से देखना और प्राप्त सूचनाओं का आगामी शिक्षण दिवसों में उपयोग करना ।

समीक्षा की आवश्यकता

कक्षा कक्ष में बहुस्तर के बच्चे होते हैं उनके स्तरानुसार उद्देश्य तय गतिविधियों एवं प्रगति की स्थिति को कम समयान्तराल में देखने की आवश्यकता होती हैं यानी कि किसी काम को, क्यों एवं कैसे करेंगे तथा प्रगति की स्थिति की स्पष्टता एवं समय–समय पर देखने से समयानुसार प्रभावी ढग से कार्य कर पाते हैं।

समीक्षा के दौरान ध्यान में रखने योग्य बातें		
उद्देश्य	**गतिविधियाँ**	**आकलन की योजना की समीक्षा**
1. बच्चों के स्तरानुरूप है या नहीं। 2. कक्षा स्तर को ध्यान में रखकर तय किए गए हैं या नहीं। 3. समय प्रबंधन को ध्यान में रखकर तय किए गए हैं या नहीं।	1. उद्देश्यों को ध्यान में रखकर तय की गई हैं या नहीं। 2. बच्चों की रुचि एवं स्तरानुरूप हैं या नहीं। 3. परस्पर सीखने–सिखाने के अवसर प्रदान करती हैं या नहीं। 4. गतिविधियों में लचीलापन एवं प्रायोगिकता की स्थिति हैं या नहीं।	1. गतिविधि एवं उद्देश्यों के अनुरूप सीखने की स्थिति के आकलन की योजना थी या नहीं। 2. आकलन सूचकों के साथ संबंध हैं या नहीं। 3. आकलन में व्यापकता हैं या नहीं जैसे– जानकारी, समझ, प्रयोग, विश्लेषण एवं नवीन ज्ञान सृजन की स्थिति। 4. बहु आयामों से (शिक्षक, सहपाठी, स्वयं, अभिभावकों द्वारा)

समीक्षा के आयाम				
सहभागिता	**बच्चों को आ रही कठिनाइयाँ**	**अनुभव एवं आकलन**	**योजना में किए गए बदलाव के बारे में**	**बच्चों की उपलब्धि के बारे में**
1. पहल की स्थिति 2. सहयोग 3. व्यवहार 4. ध्यानकेन्द्रण	1. विषयवस्तु से संबंधित। 2. प्रक्रिया से संबंधित। 3. संवाद से संबंधित।	1. उद्देश्य के बारे में 2. गतिविधियों के बारे में। 3. समझ की स्थिति के बारे में	1. उद्देश्य एवं गतिविधियों में किए जाने वाले बदलाव के बारे में	1. उद्देश्यों के सापेक्ष सीखने की स्थिति क्या रही?

बच्चे के भाषाई कौशलों के विकास के लिए गतिविधियाँ

बच्चा अपने परिवेश में परिवार से भाषा सीखता है और जब वह विद्यालय में प्रवेश लेता है,उस समय उसके पास अपनी सशक्त भाषा होती है, जिसके माध्यम से वह दुनिया को समझता है,अर्थ ग्रहण करता है और राय बनाता है,अपनी अभिव्यक्ति देता है। आरंभ में विद्यालय को उन्हीं क्षमताओं के विकास पर बच्चे के साथ काम करना होता है। इसके साथ–साथ पढ़ना व लिखना सिखाने की तैयारी होती है।

पढ़ने–लिखने की तैयारी के रूप में बच्चे के साथ कई प्रकार की गतिविधियाँ/मौखिक वार्तालाप करना होता है। पढ़ने से संबंधित वे सब गतिविधियाँ करनी होती है, जो सहज होती हैं और जो अपने परिवेश में मिल जाती हैं। यहाँ कुछ गतिविधियों का संकलन दिया जा रहा है,जो बच्चे की मौखिक भाषा के साथ–साथ उनके पढ़ने–लिखने के कौशलों के विकास में मदद करती हैं।इन गतिविधियों में शिक्षक अपने परिवेश व स्थिति के अनुसार परिवर्तन कर सकता है।

मौखिक भाषाई गतिविधियाँ

"एक क्या देखा ?"

पहला चरण :– एक बच्चे से कहिए वह बाहर जाऐ देखे कि बाहर क्या–क्या हो रहा है और लौटकर दूसरों को बताए। उदाहरण के लिए बताएगा कि उसने एक ठेला, दो दुकानें और साइकिल देखी।

दूसरा चरण :– अब बाकी बच्चे उससे सवाल पूछेंगे। बच्चे गोल घेरे में बैठें और एक बच्चा एक ही सवाल पूछे। उदाहरण के लिए एक बच्चा पूछ सकता है, साइकिल के हैण्डिल पर क्या लटका था ? जवाब है– एक टोकरी लटकी थी। अगला सवाल, टोकरी का रंग कैसा था ?

तीसरा चरण :– जब सारे बच्चे एक–एक सवाल पूछ लें तो अध्यापक उस बच्चे से पूछे (जो बाहर गया था) कि उसे कौन सा प्रश्न सबसे अच्छा लगा। मान लीजिए, कि जवाब हो 'शशि का सवाल सबसे अच्छा था– तो अगला सवाल पूछिए: वह सवाल क्या था ?

चौथा चरण :– अब खेल के अगले दौर की शुरूआत शशि से होगी। उससे कोई ऐसी चीज देखने को कहिए जो पहले बच्चे ने नहीं देखी थी। शशि के वापस आने पर बच्चों से कहें कि वे नए सवाल पूछें, ऐसे सवल जो पहले किसी ने नहीं पूछे।

खोजियों की खबर

पांच या छः बच्चों की टोली को स्कूल की इमारत के आसपास या भीतर किसी निश्चित चीज या जगह का अध्ययन करने के लिए भेजिए। जैसे वे पेड़ों के एक झुंड, चाय की गुमटी, टूटे हुए पुल या घोंसले का मुआयना करने जा सकते हैं। उनसे कहिए कि वे सावधानी से उस चीज की खोजबीन करें और अपने निरीक्षणों की आपस में चर्चा करें।

जिस समय खोजी-दल बाहर गया हो, बाकी बच्चों को उस चीज के बारे में विस्तार से बताएं। जैसे यदि खोजी-दल चाय की गुमटी का अध्ययन करने गया है तो बच्चों को बताएं कि वहां क्या-क्या चीजें उपलब्ध हैं (बच्चों से पूछें भी), उसे कौन चलाता है, वहां उपलब्ध चीजें, कहां-कहां से आती हैं, आदि।

वापस आने पर खोजी-दल कक्षा के सवालों का सामना करे। प्रश्न पूछने में अध्यापक की बारी भी आनी चाहिए।

अगली बार किन्हीं और बच्चों का खोजी-दल बनाइए।

बूझो, मैंने क्या देखा?

एक बच्चा बाहर जाए, दरवाजे पर या कक्षा से कुछ दूर खड़े होकर आसपास दिखाई दे रही सैकड़ों चीजों में से कोई एक चुन ले। वह चीज कुछ भी हो सकती है—पेड़, पत्ता, गिलहरी, चिड़िया, तार, खम्भा, पत्थर। लौट कर वह उस चीज के बारे में सिर्फ एक वाक्य बोले, जैसे, 'मैंने एक भूरी चीज देखी।'

अब इस बच्चे से एक प्रश्न पूछ कर उस चीज का अनुमान लगाने का मौका कक्षा के हर बच्चे को मिलेगा। उदाहरण के लिए—

पहला बच्चा : 'क्या वह पतली है?'
उत्तर : 'नहीं'।
दूसरा बच्चा : 'वह कितनी बड़ी है?'
उत्तर : 'वह काफी बड़ी है।'
तीसरा बच्चा : 'क्या वह कुर्सी जितनी बड़ी है?'
उत्तर : 'नहीं, कुर्सी से छोटी है।'
चौथा बच्चा : 'क्या वह मुड़ सकती है?'

अन्त में सही अनुमान लग चुकने के बाद कुछ बच्चों को अपने प्रश्नों के उत्तरों से आपत्ति हो सकती है। उदाहरण के लिए किसी को यह आपत्ति हो सकती है कि रंग भूरा नहीं, मिट्टी जैसा था। ऐसी स्थिति में बारीक अन्तर देख पाने में अध्यापक को बच्चों की मदद करनी होगी।

जो कहा सो करना

बच्चों से कहिए कि वे ध्यान से सुनें और जो बताया जाए उसे करें। पहले एकदम सरल निर्देश दीजिए और पूरी कक्षा से निर्देश का एक साथ पालन करने को कहिए।

उदाहरण : 'अपना सिर छुओ।'
'अपनी दाहिनी आंख बंद करो।'
'सिर पर ताली बजाओ।'

कक्षा को दो समूहों में बांट दीजिए। आप पहले समूह को निर्देश देंगे और इस समूह के बच्चे दूसरे समूह को वही या मिलते-जुलते निर्देश देंगे।
धीरे-धीरे निर्देश को जटिल बनाइए। उदाहरण :
'दोनों हाथों से अपना सिर छुओ, फिर दाहिने हाथ से दाहिना कान छुओ।'
'दोनों आंखें मीचो, अपने पड़ोसी को छुओ, उससे कहो कि अपना बांया हाथ तुम्हें दे।'
जब एक समूह के बच्चे दूसरे समूह को निर्देश दे रहे हों तो यह जरूरी नहीं कि वे अध्यापक के निर्देशों को ज्यों का त्यों दुहराएं। उन्हें ताजे निर्देश रचने के लिए प्रोत्साहित कीजिए।

तुलना

एक जैसी दिखने वाली चीजों के जोड़े बनाइए, जैसे दो पेड़ों की पत्तियां, अलग-अलग पौधों के फूल, पत्थर, अलग-अलग आकार में काटे गए कागज के टुकड़े।

बच्चों को बताइए कि आप जोड़े की एक चीज का वर्णन करेंगे और वर्णन ध्यान से सुन कर उन्हें यह अनुमान लगाना है कि आप किस चीज की चर्चा कर रहे थे। उदाहरण : 'मैं जिस पत्ती के बारे में सोच रहा हूं, वह लम्बी और चिकनी है और उसकी किनार सीधी है।'

यह गतिविधि आठ-दस बार करने के बाद वर्णन करने का काम बच्चों को सौंप दीजिए। हर बार यह गतिविधि करते वक्त चीजें, बदल दीजिए। हर बार वर्णन के लिए और बारीक बातें चुनिए।

वर्णमाला के टुकड़े

वर्णमाला को तीन भागों में बांटिए और हर भाग के अक्षर बड़े आकार में कागज़ की एक लम्बी पट्टी पर लिख दीजिए। तीनों भागों को दीवार पर कुछ-कुछ दूर पर चिपका दीजिए— ऐसी जगह जहां वह सब बच्चों को साफ व आसानी से दिखाई दे। मात्राओं को एक चौथी पट्टी पर लिखिए।

अब बोर्ड पर एक शब्द लिखिए। बच्चों से कहिए कि उस शब्द के अक्षर और मात्राएं ध्यान से देख कर उन्हें दीवार पर चिपकी पट्टियों में पहचानें।

विज्ञान की शुरुआत

रोजमर्रा की चीजों की चर्चा के लिए उनका वर्गीकरण कीजिए। उदाहरण: 'उड़ने वाली चीजें,' 'गोल चीजें, 'चपटी चीजें' और 'तैरने वाली चीजें'।

इस तरह बनाए गए किसी एक समूह का नाम बोर्ड पर लिखिए, फिर उसे पढ़ कर सुनाइए और बच्चों से कहिए कि वे उस समूह में शामिल की जा सकने वाली तीन चीजों के नाम सुझाएं। जैसे, 'उड़ने वाली चीजों' में बच्चे पतंग, हवाई जहाज और बादल सुझा सकते हैं। इन्हें बोर्ड पर साफ-साफ लिखिए।

बच्चों से कहिए कि चीजों के नाम अपनी कापी पर उतारें और हर चीज का एक छोटा-सा चित्र भी बनाएं।

शब्दों का नागिन टापू

जमीन पर एक या कई नागिन टापू के खेल जैसे चौखाने बनाइए। हरेक घर में रोजमर्रा की चीजों जैसे गिलास, चम्मच, घर, पेड़ के नाम लिख दीजिए और साथ में उस चीज का एक छोटा-सा प्रतीक बना दीजिए।

बच्चों को पांच-पांच के समूह में बांट कर हर समूह में एक रैफरी नियुक्त कर दीजिए। रैफरी का काम है गप्पी फेंकना और हर बच्चे की चाल का निरीक्षण करना। खेलने वालों को हर घर में पैर रखते समय उस पर लिखी चीज का नाम पढ़ कर सुनाना है और गप्पी वाले घर के ऊपर से गुजर जाना है।

यह खेल खिलाते वक्त रैफरी का काम हर बार किसी नए बच्चे को दीजिए।

जानी-पहचानी चीजें

घर में रोज काम आने वाली चीज़ों और अन्य जानी-पहचानी चीजों की चर्चा बच्चों से कीजिए। बच्चों से कहिए कि बर्तन, कपड़े, और गाड़ियाँ जैसे समूह-नामों के अन्तर्गत आने वाली अलग-अलग चीजों के नाम बताएं, जैसे बर्तन के अन्तर्गत चम्मच, देगची, पतीली आदि। एक समूह में आने वाली चीजों की सूची बोर्ड पर बनाइए।

बच्चों को दो समूहों में बैठाइए। पहले समूह का हर बच्चा बोर्ड पर लिखी सूची में से कोई एक नाम अपनी कापी पर उतारेगा, जैसे कोई बच्चा लिखेगा— चम्मच, कोई लिखेगा— कड़ाही। दूसरी समूह के बच्चे एक-एक करके कोई एक चीज़, जिसका नाम बोर्ड पर दिया है, पहले समूह से मांगेंगे। जिस भी बच्चे ने उस चीज़ का नाम अपनी कापी में नोट किया है, वह उसे मांगने वाले बच्चे के पास जाकर चीज़ का नाम लिखने में मदद करेगा।

नामों का संग्रह

आप जहां कहीं भी रहते हैं वहां तरह-तरह के नाम आपको दुकानों, बसों या मील के पत्थरों और दीवारों पर मिल जाएंगे। गांवों में दीवारों पर लिखे नारे या पोस्टर और विज्ञापनों में लिखी जानकारी भी काम आ सकती है।

बच्चों से कहिए कि वे घर से स्कूल के रास्ते में दिखने वाले नामों या संदेशों की सूची बनाएं। सारे नामों को ब्लैकबोर्ड पर लिख कर एक-एक कर बच्चों से उनकी व्याख्या (यानी वह कहां लिखा है, उसका अर्थ क्या है) करवाइए।

शब्दपूर्ति

बच्चों के जोड़े बना दीजिए। एक बच्चा कोई शब्द लिखना शुरू करेगा, और दूसरा बच्चा उसे पूरा करेगा। वे तब तक अपनी बारी लेते जाएंगे जब तक दोनों 10 शब्द सफलतापूर्वक पूरे नहीं लिख लेते।

इर्दगिर्द की जगहें

यह पिछली गतिविधि का विस्तार है लेकिन इसमें बच्चे अपने आसपास की जगहों के नक्शे बनाएंगे, न कि वहां जाने के रास्ते के। उदाहरण:

स्कूल का पिछवाड़ा
कक्षा का कमरा
पास स्थित तालाब या नदी

नक्शे में दिखाई गई किसी एक चीज का नाम उचित जगह पर लिख दीजिए। बच्चे से यही नक्शा फिर बनाने को कहिए और इस बार उसी से कहिए कि वह उस चीज को दिखाने की जगह उसका नाम नक्शे में लिखे।

वहां पहुंचना

बच्चों से कहिए कि अपने बड़ों से आसपास के गांवों और शहरों के नाम पूछ कर आएं। इन नामों की सूची बोर्ड पर बनाइए और बच्चों से कहिए कि ये नाम उतार लें।

अब इन नामों को दिशा के अनुसार रख कर बोर्ड पर एक सरल नक्शा बनाइए। नाम बच्चों में बांट कर बच्चों को नक्शे के अनुसार बैठाइए। दिशा और दूरी को लेकर एक संक्षिप्त संवाद रचिए। उदाहरण:

''मैं झांसी जा रहा हूं।'
'झांसी कहां है?'
उत्तर में।'
'कितनी दूर...'

दूरी और दिशा से सम्बन्धित शब्द लिखना सिखाइए।

सिर्फ एक शब्द

पांच-पांच बच्चों के समूह बना दीजिए। हर समूह के पास एक कागज़ या कापी और एक पैंसिल होगी। हर टोली में एक बच्चे को "नेता, यानी शुरू करने वाला नियुक्त कर दीजिए।

नेता अपने मन में कोई वाक्य सोचेगा पर कागज़ पर वह सिर्फ एक शब्द लिख कर कागज़ और पैंसिल अगले बच्चे को थमा देगा। यह बच्चा भी सिर्फ एक शब्द जोड़ेगा। यह शब्द ऐसा होना चाहिए जो पिछले शब्द से शुरू हुए वाक्य को आगे बढ़ाता हो। इस तरह कागज टोली में घूमता रहेगा जब तक वाक्य पूरा न हो जाए।

टोली का कोई भी सदस्य यह दावा कर सकता है कि वाक्य बीमार पड़ गया है, अतः उसे छोड़ दिया जाए। यदि बाकी बच्चे इस दावे से सहमत हों तो कागज नेता को वापस दे दिया जाएगा और वह एक नए वाक्य का पहला शब्द लिखेगा।

नक्शा बनाना

बच्चों से पूछिए कि वे घर कैसे पहुंचते हैं पहले उन्हें यह बताइए कि आप स्वयं कैसे घर पहुंचते हैं– रास्ते में पड़ने वाली जगहों और चीज़ों का संक्षेप में विवरण दीजिए।

जब सभी बच्चों को अपने घर का रास्ता बताने का मौका मिल चुका हो तब उनसे कहिए कि जो रास्ता उन्होंने अभी बताया है उसे एक नक्शा बना कर दिखाएं। स्वयं अपने घर का रास्ता ब्लैकबोर्ड पर बना कर दिखाइए। बच्चे जब अपने नक्शे बनाने में व्यस्त हों तो उनके पास जाकर नक्शे में दिखाई गई किसी एक चीज़ जैसे पेड़, दुकान, डाक का डिब्बा, का नाम नक्शे में लिख दीजिए। बच्चों से यह नाम नक्शे के नीचे उतारने के लिए कहिए।

अगली बार यह गतिविधि किसी और जगह जाने के रास्ते को लेकर कीजिए, जैसे मेरे दोस्त का घर, सब्जी मंडी, अस्पताल।

हर बार नक्शे में लिखने के लिए शब्दों की संख्या बढ़ाइए।

जो पढ़ा वह करो

जो बच्चे सीख चुके हैं उन्हें यह भी सीखना जरूरी है कि पढ़ने का सम्बन्ध करने से है। इस गतिविधि में अध्यापक बोर्ड के पास चुपचाप खड़ा रहता है और बोलने के स्थान पर छोटे-छोटे निर्देश बोर्ड पर लिखता जाता है।

हरेक बच्चे को उसकी क्रमसंख्या पता होनी चाहिए। बोर्ड पर निर्देश लिखते समय साथ में किसी बच्चे की क्रमसंख्या भी लिख दें। जैसे– 'उठकर बाहर जाओ, एक पत्थर लाओ-10'। इस निर्देश का मतलब है कि 10 नम्बर के बच्चे को उठ कर बाहर जाना है और एक पत्थर लाना है। अब अगला निर्देश हो सकता है- 10 नम्बर से पत्थर लेकर उसे अपने दाहिने घुटने पर रखो-5'।

धीरे-धीरे निर्देशों को और जटिल बनाते जाएं। जटिल निर्देश इस तरह के हो सकते हैं कि बच्चा दीवार पर टंगा पोस्टर देख कर कोई खास चीज ढूंढे, या अस्पताल का रास्ता बताएं, या स्कूल के बाहर लगे पेड़ों की संख्या गिन कर बताएं, आदि।

पिछला शब्द, अगला शब्द

इस गतिविधि के लिए बाल साहित्य की किताबें पर्याप्त संख्या में होना जरूरी हैं। किताबें बच्चों में इस तरह बांटिए कि हर बच्चे को कोई ऐसी किताब मिले जिसे वह आसानी से पढ़ सके। बच्चों से कहिए कि वे किताब के किसी भी पन्ने को खोलें और दाहिना पेज देखें। क्या इस पेज के अन्त में पूर्णविराम आता है? यदि हां, तो कोई और पन्ना खोलें।

अब पूरा दाहिना पन्ना चुपचाप पढ़ डालें। अंत तक पहुंच कर रुक जाएं और अगला पन्ना न पलटें।

प्रत्येक बच्चे से पूछिए कि वह अंदाज से बताए कि अगले पृष्ठ का पहला शब्द क्या होगा? जब वह अपना अनुमान बता दे तब उससे पन्ना पलट कर यह देखने के लिए कहिए कि अनुमान सही था कि नहीं? सही अनुमान पर बाकी बच्चे ताली बजाने की परम्परा डाल सकते हैं।

जब सबकी बारी आ चुके और सब बच्चे अगला पन्ना पलट चुके हों तो फिर पहले बच्चे से शुरु कीजिए। इस बार हर बच्चे को याददाश्त के आधार पर यह बताना है कि पिछले पेज का आखिरी शब्द क्या था?

फर्श पर नक्शा

अगर आपकी कक्षा में फर्नीचर नहीं है तो अच्छा है, नहीं तो बच्चों को बरामदे, पिछवाड़े या किसी और खुली जगह में ले जाइए जहां वे आसानी से घूम-फिर सकें।

दौड़ने, चलने, एक पैर से कूदने, एक कदम छोड़ कर कूदने, घोड़े की तरह कूदने, लम्बे डग भरने, आधे कदम लेने, उल्टे चलने, और बगल चाल के लिए अलग-अलग प्रतीक चुन लीजिए। ध्यान रखें कि प्रतीक बहुत सरल हों और आसानी से याद किए जा सकें। जैसे दौड़ने के लिए:————————→एक कदम छोड़ कर कूदने के लिए:

अब जिस जगह आप यह गतिविधि कर रहे हैं उसके हर कोने के लिए प्रतीक नियत कर दीजिए। बच्चों को समझा दीजिए कि किस प्रतीक का क्या अर्थ है। पहली बार यह गतिविधि करते वक्त तीन या चार से ज्यादा प्रतीक न लीजिए, वरना बच्चे कुछ दिक्कत महसूस करेंगे।

शुरू करने के लिए कोई सा कोना चुन लीजिए। बच्चों को बताइए कि उस कोने में पहुंचकर उन्हें फर्श पर बने प्रतीक के अनुसार काम करना है। जैसे, यदि फर्श पर तीर का निशान बना है तो उन्हें दौड़ने लगना है, और फिर अगले कोने में पहुंच कर वहां बने प्रतीक के अनुसार काम करना है। प्रतीक मिट्टी में हाथ से बनाए जा सकते हैं या वहां गत्ते या पत्थर का टुकड़ा रखकर रंग से बनाए जा सकते हैं।

जब हर बच्चे को तीन-चार बार भाग लेने का मौका मिल चुका हो तब प्रतीक की जगह उस गतिविधि का नाम साफ अक्षरों में लिख दीजिए जो प्रतीक में दर्शाई गई थी। जैसे तीर मिटाकर लिख दीजिए—'दौड़ो'। इसके बाद गतिविधि पहले की तरह चालू रखिए।

धीरे-धीरे प्रतीकों की संख्या बढ़ाते जाइये। कक्षा में वापस आकर बाहर की जगह का नक्शा ब्लैकबोर्ड पर बनाइए और उसमें सही जगहों पर गतिविधियों के नाम लिखिए।

कहानी बनाना

बोतलों और डिब्बों के ढक्कन, कपड़े के टुकड़े, चूड़ी के टुकड़े, छोटे-छोटे पत्थर, पत्तियां, निबें, और इस तरह की तमाम चीजें इकठ्ठी कर लीजिये। पांच-पांच या छः चीजों की ढेरियां बना कर पांच-पांच की हरेक टोली को एक ढेरी दे दीजिए। हर टोली को एक जगह बैठ कर चीजों पर चर्चा करनी है और लगभग पन्द्रह-बीस मिनट में एक कहानी गढ़नी है। सारी टोलियों के लौटने पर हर टोली में से एक बच्चा कहानी सुनाएगा। यदि टोली के अन्य सदस्य कोई फेरबदल करना चाहें, तो उन्हें खुशी से ऐसा करने दीजिए।

इस गतिविधि की सफलता इस बात पर निर्भर है कि आपके बच्चों को कहानियां सुनाने का कितना अनुभव है? साथ ही यह इस बात पर भी निर्भर है कि क्या वे किसी भी घटना को कहानी की तरह सुना सकते हैं? कोई भी घटना या वस्तु एक दिलचस्प कहानी की बुनियाद बन सकती है। यदि आप कल्पना और सूझबूझ के काम लेंगे तो यह आदत शीघ्र ही आपके बच्चों में भी पड़ जाएगी।

तुम कहां रहते हो?

बच्चे दो पंक्तियों में आमने-सामने बैठते हैं। एक पंक्ति 'बताने वालों' की है, दूसरी 'सुनने वालों' की। पहली पंक्ति में बैठे हर बच्चे को अपने सामने बैठे बच्चे को समझाना है कि वह अपने घर कैसे जाता है। रास्ते को अच्छी तरह समझने के लिए सुनने वाला कितने ही सवाल पूछ सकता है। उदाहरण :

बताने वाला : 'सीधे जाकर मुड़ जाओ।'
सुनने वाला : 'कितनी दूर तक सीधे जाना है?'
बताने वाला : 'कूड़े के ढेर तक। वहां से मुड़ना है।'
सुनने वाला : 'दाहिने मुड़ना है कि बाएं।'
बताने वाला : 'दाहिने....नहीं, नहीं, बाएं।'
जब सभी बताने वालों की बारी आ चुके तब सुनने वाले बताने वाले बन जाएं और खेल फिर शुरू।

तस्वीर की छानबीन

पांच-पांच बच्चों की टोलियां बनाइए और हर टोली को एक चित्र दे दीजिए। यह गतिविधि शुरू करने से पहले आप को सारे चित्रों का ध्यान से अध्ययन कर लेना चाहिए और पृष्ठ 12 पर सुझाए गए सभी स्तरों के प्रश्न तैयार कर लेने चाहिए। इस तरह हरेक टोली के लिए पांच प्रश्न आपके पास होंगे।

तस्वीर का विश्लेषण करने और आपस में चर्चा करने के लिए कम से कम पांच मिनट बच्चों को दीजिए। टोली के सदस्यों को एक से पांच की क्रमसंख्या में रख दीजिए और इस क्रम से पांचों प्रश्न पूछिए।

ये प्रश्न बच्चों से अलग-अलग, अनौपचारिक बातचीत के लिए भी उपयोगी हैं। इस गतिविधि को दो-चार बार आयोजित करने के बाद आप नए-नए प्रश्न आसानी से बना सकेंगे, लेकिन शुरू में पहले से पूरी तैयारी करके रखना ही ठीक रहेगा।

सही तस्वीर कौन सी है?

यह गतिविधि तभी की जा सकती है जब आपके पास बाल साहित्य की कई किताबें—खास तौर से चित्रों वाली किताबें—हों (देखिए परिशिष्ट)।

बच्चों के जोड़े बना दीजिए। वे आमने-सामने दो पंक्तियों में बैठें। एक पंक्ति के बच्चे किताबों को उलट-पुलट कर कोई एक तस्वीर चुन लें। अब इस पंक्ति का हर बच्चा अपने सामने बैठे बच्चे को तस्वीर दिखाए बिना तस्वीर का विवरण देगा। विवरण देकर किताब बंद करके वह सामने वाले बच्चे को दे देगा और अब इस बच्चे को सुने हुए विवरण के आधार पर तस्वीर ढूंढनी होगी।

दोनो पंक्तियां किताबों की अदला-बदली करती रहें। यह गतिविधि दीवार पर टंगे चित्रों की मदद से भी की जा सकती है।

केस स्टडी– 1

अनिल कौर मानस गंगा विद्यालय में शिक्षिका हैं। उनका कहना है कि वह बच्चों के साथ बातचीत को आगे बढ़ाने के लिए चित्रों का प्रयोग करती हैं। मैं अपने बच्चो के लिए उनके परिवेश से संबंधित चित्रों का इस्तेमाल करती हूँ । चित्र संख्या 1 में उदाहरण के तौर पर दिया जा रहा है।

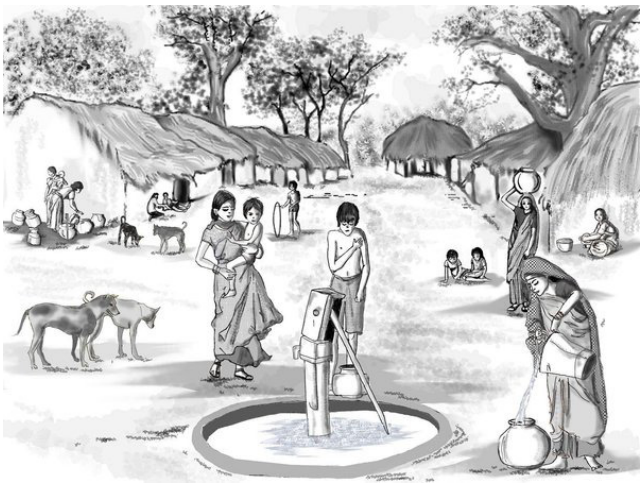

1.अनिल द्वारा कॉर्कबोर्ड में डिस्प्ले किए गए चित्र

मैं सबसे पहले चित्रों को कॉर्क बोर्ड पर लगाती हूँ। चित्र के बारे में मैं पहले खुद नहीं बताती हूँ, मैं इंतजार करती हूँ कि बच्चे स्वयं चित्रों को देखें, उनपर विचार करें और उनको जाँचें–परखें। मैं एक –दो दिन तक बच्चों का अवलोकन करती रहती हूँ कि वे चित्रों के बारे में एक–दूसरे से बात करते और उनके विवरणों के बारे में चर्चा करते हुए सुनती हूँ।

इसके बाद अगले दो–चार दिन नियमित रूप से 15 से 20 मिनट तक उस कक्षा के बच्चों के साथ उन चित्रों पर चर्चा करती हूँ। इस कार्य के लिए मै पहले से ही कुछ प्रश्नों की सूची बनाकर रखती हूँ। कुछ प्रश्न सरल वर्णनों को सामने लाने के लिए होते हैं और कुछ अन्वेषण बातचीत को आगे बढ़ाने से संबंधित, तर्क, अनुमान और बातों को बच्चों के अनुभवों से जोड़ने के रूप में होते हैं। यहाँ प्रत्येक प्रकार के प्रश्नों के उदाहरण देखिए

- यह चित्र किसका है ?
- चित्र में आपको क्या–क्या दिखाई दे रहा है?
- चित्र में कौन क्या कर रहा है?
- क्या आपने भी कभी इस प्रकार के खेल खेले हैं? क्या आप बता सकते हैं कि ये कैसे खेले जाते हैं?
- चित्र में कौन सा भाग/चीज आपको सबसे अच्छी लगी? और क्यों?

मैं बच्चों की बातों में कोई सुधार या टोकाटोकी किए बिना ध्यान से सुनती हूँ कि वे क्या कह रहे हैं। मैं इस बात पर जोर देती हूँ कि बाकी सभी बच्चे भी आपस में एक–दूसरे की बात को ध्यान से सुनें। मेरे बच्चे जो देखते और जानते हैं, उसके बारे में बोलने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करने में मुझे उनसे संबंधित बहुत सी बातें जानने में मदद मिलती है।

इससे मुझे उनकी क्षमता का आकलन करने उन्हें आगे बढ़ाने और उनके लिए सोचकर योजना बनाने में मदद मिलती है।

मेरे कुछ बच्चे बोलने में शर्माते हैं, लेकिन वे अन्य सहपाठियों की बातों को ध्यान से सुनते हैं। मैं उनसे सरल प्रश्न पूछने की कोशिश करती हूँ, जिनके जबाव वे एक शब्द में या सिर हिलाकर दे देते हैं, इससे भी उनके बारे में मुझे कुछ बातें समझ में आ जाती हैं।

मैं बच्चों को बोलने और सुनने के खूब अवसर देती हूँ, इससे बच्चे मेरे साथ धीरे–धीरे खुलकर बात करने लगते हैं, और इससे उनको सीखने में बहुत मदद मिलती है।

विचारणीय बिन्दू :
• अनिल के कौन–कौन से प्रश्न बच्चों को खोजी बातचीत को आगे बढ़ाने में मदद करते हैं? • वे किस तरह से सुनिश्चित करती होंगी कि उनकी कक्षा के सभी बच्चे इस गतिविधि में सम्मिलित हैं? • अनिल के पास अपने बच्चों के वक्ता और श्रोता के आकलन करने के कौन–कौन से अवसर उपलब्ध हैं?

'साइकिल पर थैले' यह एक काल्पनिक कहानी है। कहानी एक प्रकार का शब्द चित्र होती हैं अतः कहानी को सुनाना एक कल्पना का विषय है। गद्य साहित्य की विधाओं में कहानी सबसे अधिक लोकप्रिय विधा है। संघर्ष एवं कौतूहल के साथ–साथ कहानियों में मनोरंजन की क्षमता होती है। पढ़ने की कुंजी अनुमान लगाने का कौशल है। इस कौशल के विन्यास में कहानी आश्चर्यजनक योगदान करती हैं। नियमित रूप से इन्हें सुनने से बच्चे भाषा की बुनियादी संरचनाएँ ग्रहण करते हैं।

कहानियों को स्वर में उतार–चढ़ाव एवं हावभाव के साथ बच्चों को सुनाएँ ताकि वे कहानी में खो जाएँ। पाठ्यपुस्तक में दी गई कहानियों के अतिरिक्त पारंपरिक कहानियों ; जैसे– पंचतंत्र, जातक कथाएँ, विक्रमादित्य की कहानियाँ आदि और अलग–अलग देशों एवं क्षेत्रों की लोककथाएँ भी बच्चों को पढ़ने के लिए दें व आप स्वयं भी सुनाएँ। कहानी सुनते समय बच्चे अनुमान लगाते हैं कि आगे क्या होगा। अनुमान का सही सिद्ध होना बच्चे को आनंदित तो करता ही है, उनका विश्वास भी बढ़ाता है। यही विश्वास पढ़ने की क्षमता के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कहानी बच्चे के लिए सार्थक दुनिया रचती हैं।

केस स्टडी– 2

आमागढ़ बोधशाला में अध्यापन करवाने वाली शिक्षिका जीनत बताती हैं कि किस प्रकार से उन्होंने बच्चों को **साइकिल पर थैले** एक छोटी कहानी से बच्चों को आकर्षित किया।

यह कहानी छोटी एवं सरल सी है। इसमें रामू अपने तीन दोस्तों के साथ पिकनिक में जाने वाला था, वे तीनों रामू की ही साइकिल में बैठकर जाने वाले थे। उन तीनों के पास एक–एक थैला था और प्रत्येक के थैले में कुछ न कुछ अलग–अलग चीजें थीं। सभी ने अपने–अपने थैले साइकिल में बाँध दिए पर उनके बैठने के लिए अब जगह नहीं बचती।

कहानी सुनाने से पहले मैंने , कुछ ऐसी चीजों के बारे में सोचा, जो थैले में हो सकती थीं। मैंने सबसे पहले बच्चों को एक बड़ा सा थैला दिखाया, जो मैं अपने घर से लाई थी। वे उसे देखकर काफी अचंभित हो रहे थे। आपस में कुछ एक –दूसरे के चेहरे देखकर अनुमान लगाने लग गए थे कि इसमें ये हो सकता है, वो हो सकता है.....। इसके बाद मैंने कहानी सुनाई । और जैसे ही कोई वाक्यांश..... और उस थैले में थे, कहते हुए बच्चों को उसमें सम्मिलित करती थी। मैंने थैले में रखने के लिए जो वस्तुएँ सोची थीं उनमें एक कप और एक अनार शामिल थे।

हर प्रकरण के दौरान मैंने बच्चों से कहा कि वे हावभाव के साथ उन वस्तुओं का वर्णन करें। सलमा ने कप का प्रदर्शन करने के लिए अपने अंगूठे और पास वाली अँगुली को मिलाते हुए हाथ को मुँह के पास लाकर पीने का अभिनय किया। अजहर ने एक हाथ की सभी अँगुलियों को मोड़कर ऊपर की ओर किया ।

एक बार सुनाने के बाद मैंने दुबारा उस कहानी को सुनाया और इस बार हर हिस्से के बाद मैं थोड़ी देर विराम लेती रही ताकि बच्चे मेरा अनुकरण करते हुए कहानी को दोहराते जाएं। अगली बार मैंने कहानी फिर से कहना शुरू किया और बच्चे मेरे कहानी सुनाने के साथ–साथ हावभाव के साथ कहानी दोहराने लगे।

दो दिन बाद मैंने बच्चों को दो–दो की जोड़ी में बाँटा और उनसे कहा कि साइकिल पर थैले वाली कहानी एक–दूसरे को सुनाएँ। चार बच्चे जो दो दिन पूर्व अवकाश पर थे अतः उनके साथ मैंने उन बच्चों की जोड़ी बनाई जिन्होंने वह कहानी सुनी थी, इनके समूह में तीन–तीन बच्चे थे।

मैंने पूरी कक्षा के बच्चों को चित्रात्मक पुरानी कहानी की किताबों में से चित्र काटने, और उस थैले में चित्र चिपकाने उनमें लेबल लगाने के लिए शब्द लिखने में अपनी मदद करने के लिए बुलाया।

अगले हफ्ते मुझे एक **ताँगे की सवारी** नामक कहानी मिली। जिससे मुझे दूसरी कहानी बनाने की प्रेरणा मिली। इस बार उसे **रिक्शे में थैले** नाम दिया। इस कहानी के लिए मैंने खुद चीजों का चयन करने की बजाए बच्चों से ही सुझाव माँगे कि इस थैले में क्या–क्या रखा जाए।

विचारणीय बिन्दू:
• ऐसी क्या चीज़ है जो 'साइकिल पर थैले' को एक पठन गतिविधि बनाती है। • ज़ीनत के बच्चे भाषा में क्या–क्या सीख रहे थे? • वे वर्णों, शब्दों व ध्वनियों के बारे में क्या–क्या सीख रहे थे? • ऐसी क्या बात थी जो बच्चों को हावभाव के साथ कहानी कहने के लिए प्रेरित कर रही थी?

बच्चों को प्रारंभिक पठन गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। ज़ीनत की कक्षा में बच्चे सक्रिय भाग ले रहे थे , क्योंकि –

- वे साथ मिलकर कहानी सुन रहे थे।
- प्रत्येक वाक्यांश के बाद ज़ीनत जैसे ही और कहती बच्चे पहले ही बोलने लग जाते –इस थैले में थे..... को दोहराते हुए हावभाव के साथ उसमें सम्मिलित हो रहे थे।
- चित्रों और लेबल को थैले में चिपकाकर वे परिचित कहानी की ध्वनियों को अक्षरो, शब्दों और वाक्यांशों के साथ जोड़ पाने में सक्षम थे।
- शिक्षक के द्वारा अवसरों की उपलब्धता से वे हावभाव को स्वयं रच सकने में सक्षम होते हैं।

कोई मजेदार कहानी कई बार सुनना बच्चों को अच्छा लगता है। इससे वे पात्रों को जान सकते हैं, इससे आगे क्या होगा का अनुमान लगा सकते हैं, कहानी को स्वयं दुबारा सुना सकते हैं।

कहानी कहने के उद्देश्य स्वभावतया मनुष्य हर स्थिति में आनंद प्राप्त करने की इच्छा रखता है अथवा यों भी कह सकते हैं कि वह दुख–दर्द को भुला देना चाहता है। इन दोनों वृत्तियों से प्रेरित होकर ही कहानी सुनता है। कहानी आनन्द प्राप्ति की स्वभाविक खुराक होती है और दर्द की दवा भी। नन्हें बालक अपनी कल्पना की तरंगों में ऊँची से ऊँची उड़ान भरने के लिए,वास्तविकता की दुनिया को जान समझ कर उसकी कल्पना के प्रदेश को उघाड़ने के लिए अपने निजी अनुभवों को कहानी के द्वारा पुनः ताजा करने के लिए अपनी अधूरी इच्छाएँ पूरी करने के लिए,अपनी अक्रिय भावनाओं के निरझर को गति से प्रवाहित करने के लिए तथा अन्ततः अपने आस–पास की अच्छी न लगने वाली दुनिया और उसकी मर्यादा में आए छोटे–छोटे दुखों को पल भर भुला देने के लिए कहानियाँ सुनना चाहते हैं। इस चाहत के पीछे उनके भीतर किसी न किसी प्रकार के आनन्द की इच्छा रहती है। अक्सर ऐसा देखने में आता है कि रोता हुआ बालक जब कहानी सुनने लगता है तो रोना भूल जाता है। कहानी पढ़ते–पढ़ते या सुनते–सुनते रोगी अपनी पीड़ा को भूल जाता है। पराजित व निराश मनुष्य कहानी के वाचन और मनन द्वारा फिर से संघर्ष के लिए तैयार हो जाता है। स्वस्थ और आशान्वित व्यक्तियों को कहानियों के द्वारा अपने सम्पूर्ण जीवन के निर्माण की प्रेरणा मिलती है। शायद ही कोई ऐसा देश होगा ,जहाँ कथा साहित्य न हो और जहाँ आनन्द प्राप्ति के लिए कहानियाँ न कही जाती हो, न पढ़ी जाती हों । हर शाम खाना खा लेने के पश्चात् बालकों के झुण्ड कहानी सुनाने के लिए घर के बड़े– बूढों को घेर लेते यह परम्परा धरती के हर समाज में देखने को मिलती है चाहे वो विकसित समाज हो या अविकसित समाज। देश परदेश में घूमने वाले मुसाफिर किसी रात किसी धर्मशाला में रुकते हैं तो अन्य देशों के मुसाफिरों के साथ बैठ कर नई –नई कहानियाँ कहते सुनते हैं और दिन भर की थकान उतारते है । युद्ध के जख्मों को वीरता से झेल लेने वाले सिपाही दवा की शीशियों से भी अधिक महत्त्व कहानियाँ सुनाने वाली नर्स को देते हैं । जेल में रहने वाले कैदियों को भी मौका मिल जाता है तो वे भी कहानियाँ कहने का प्रसंग ढूँढ लेते हैं। लम्बी समुद्री यात्राओं में भी कहानियाँ ही रात में एकमात्र विनोद का माध्यम बनती हैं। राजा और रानी तो हमेशा सोने से पहले कही जाने वाली कहानियों अथवा लोककथाओं में हमसे बार– बार बतियाते हैं। कहानी की यही खासियत है कि इसमें सभी आनन्द लेते हैं। बहुत ही आनन्ददायी वस्तु है कहानी। कहानी सुनने में मनुष्य को बड़ा ही आनन्द मिलाता है । **स्पष्ट है कि कहानी सुनाने वाले व्यक्ति के समक्ष प्रथम उद्देश्य कहानी का आनन्द लेना होना चाहिए। कहानी आनन्द देने वाली चीज है तो निश्चय ही कहानी को विद्यालयी शिक्षण में महत्त्वपूर्ण स्थान मिल जायेगा । इसलिए आज अनेकों देशों में कहानी के द्वारा कई –कई विषयों को पढ़ाने की विधि व्यवहार में आने लगी हैं। प्रथम उद्देश्य से प्रतिफलित होने वाला यह कहानी दूसरा उद्देश्य है । कथा कहानी का तीसरा उद्देश्य है श्रोताओं की कल्पना –शक्ति का विकसित करना ।** इस संसार में घटित होने वाली अनेक प्रकार की घटनाओं के यथार्थ को नवीन रचना शैली में ढालकर उसे एक विशिष्ट घटना बना देना ही कहानी में निहित कल्पना तत्त्व हैं । भले ही वास्तविकता से युक्त हो तथापि उसका विन्यास कल्पना का परिणाम होता है अतएव कहानी के द्वारा कल्पना शक्ति को विकसित करने का उद्देश्य सुनिश्चित किया जाना वांछनीय है **शिक्षण की दृष्टि से कहानी का एक और भी उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी की भाषा शुद्धि की दक्षता। शुद्ध भाषा ज्ञान के लिए शुद्ध भाषा का परिचय मुख्य मार्ग होता है। कहानी के द्वारा उसका श्रोता कहानी की भाषा के परिचय में आता है । यही नहीं बल्कि जिन शब्द समूहों ,वाक्य –प्रयोगों और तुकबंदियों से भाषा अर्थपूर्ण , प्रभावशाली व यथार्थ बनती है , वे सभी तत्त्व कहानी के श्रवण द्वारा स्वयंमेव श्रोता की रूप में बन जाते हैं और उसका भाषा पर स्वच्छ नियंत्रण सध जाता है । कथा कहानियाँ लोक –साहित्य का अंग हैं । लोक साहित्य में हमेशा प्रजा की संस्कृति प्रवहित रहती है । अगर हमें अपनी भावी पीढियों को लोक संस्कृति से परिचय कराना है तो हमें वार्ता कथन और श्रवण की परंपरा को बनाए रखना चाहिए । इसके लिए कहानियाँ उपयुक्त साधन हैं ।**

चाहे जो भी कहें, कहानी एक जादुई चीज है । जो लोग चमत्कार , नवीनता और अद्भुतता के वशीभूत हो जाते हैं , उन पर कहानियों का असर भी जादू की माफिक होता है । बालकों पर तो कहानियाँ जबर्दस्त चोट करती हैं । एक अन्य दृष्टि में भी कहानी सुनाना स्वागत योग्य है । **जिस प्रकार कहानी सुनने से बालक की कल्पना शक्ति विकसित होती है उसी प्रकार कहानी सुनने से उसकी स्मरण शक्ति भी विकसित होती है ।** एक वस्तु से जुडी दूसरी वस्तु याद आने लगती है , एक अनुभव स्मरण करते ही दूसरा याद आने लगता है , एक प्रसंग को ताजा करते ही दूसरा प्रसंग झाँकने लगता है और इसका कारण है स्मरण शक्ति में विचार संकलित करने के तत्त्व का होना। हममें विचार –संकलित

करने की शक्ति जितनी अधिक प्रबल होगी हमारी स्मरण शक्ति उतनी ही बढ़ेगी । कहानी की बुनावट ही ऐसी होती है कि उसमें विचार –संकलन अत्यंत सरल और सहज होता है ।

कहानी का चुनाव जहाँ अनेक प्रकार की कहानियों का संग्रह विद्यमान है और उनके श्रोता अनेक रुचि वाले हैं वहीं इस प्रश्न का हल ढूँढना भी आवश्यक और मुश्किल है कि कैसी कहानियाँ कही जानी चाहिए और कैसी नहीं कही जानी चाहिए । एक बात तो दीपक के प्रकाश की तरह उजागर है कि सभी कहानियाँ कहने योग्य नहीं होती । कहानी सुनाना एक प्रकार की मानसिक खुराक है । जितना ध्यान शरीर की खुराक के लिए रखते हैं उतना ही ध्यान मानसिक खुराक के भी लिए रखें। जिस प्रकार सभी तरह का आहार लाभदायक नहीं होता ,उसी प्रकार सभी प्रकार की कहानियाँ हितकर नहीं होती । ऐसे में कहानी चयन के नियम त्यागने पड़ते है । प्रत्येक कहानी का चयन करते समय हमें अपने आप से निम्न तीन सवाल पूछ लेने जरुरी हैं –

1–क्या कहानी बालकों को आनन्द देंगी ।

2–क्या कहानी भाषा की दृष्टि से योग्य हैं ।

3–क्या कहानी हितकारी हैं ? अर्थात् कहानी सुनने से बालक के जीवन को निर्दोष एवं स्वस्थ मार्ग मिलेगा ?

कहानी शिक्षण के तरीके जैसा कि हमने जाना कहानी का असर बालकों पर एक जादू के माफिक असर करता है। साथ ही उसकी भाषाई क्षमताओं को विकसित करती हैं तो ये जरुरी हो जाता है कि ये जान पाएँ कि वे क्या–क्या गतिविधियाँ हो सकती हैं जिन्हें हम कहानी के माध्यम से कर सकते हैं । कहानियों पर निम्न प्रस्तावित कार्य किये जा सकते हैं –

1– कहानी को उचित उतार चढ़ाव व हावभाव , पपेट्स व चित्र चार्ट्स के माध्यम से सुनाना ।

2– अधूरी कहानी पूरी करवाना ।

3– शब्दों से कहानी बनवाना ।

4– शीर्षक देकर सामूहिक चर्चा कर कहानी बनवाना ।

5– कहानी पर अभिनय करवाना ।

6– कहानी के घटनाक्रम को क्रम में जमावाना ।

7– कहानी पर चित्रांकन करवाना ।

8–कहानी को अपने शब्दों में लिखवाना ।

9– चित्र दृश्य पर कहानी रचना करवाना ..... आदि।

साभार – कथा कहानी का शिक्षा शास्त्र – गिजूभाई

केस स्टडी– 2; अगर ऐसा हो जाए.....।

अनिल कौर का कहना है वह बच्चों को काल्पनिक लेख लिखने के लिए प्रेरित करती है। इसके लिए वह स्वयं बच्चों को काल्पनिक शीर्षक देती है। जैसे– 'अगर सारे पेड़ एक दिन के लिए चीनी के हो जाएं'/'आप अगर चिड़िया बन जाएं'... आदि।

मैं पहले बच्चों से सामूहिक रूप से बातचीत करती हूँ। मेरा ऐसे कहने पर कि– 'अगर सारे पेड़ एक दिन चीनी के हो जाएं' एकदम से तुम्हारे मन में क्या बात आई? पूछती हूँ । इस कार्य के लिए बारी–बारी से सभी को अवसर देती हूँ। जिससे कि वे अपनी मन की बात को कह सकें। उसके बाद उनके द्वारा कही बात को और आगे बढ़ाते हुए लिखने को कहती हूँ। लेखन के लिए मैं कभी तो दो से तीन बच्चों को एक साथ छोटे समूहों में बिठाती हूँ और कभी व्यक्तिगत रूप से लिखने का कार्य देती हूँ।

इस दौरान मैं प्रत्येक बच्चे के पास जाती हूँ और उससे बातचीत करते हुए और कल्पना करने के लिए प्रेरित करती हूँ, मैंने पाया कि बच्चों को थोड़ा बातचीत करते हुए सोचने या कल्पना करने के लिए प्रेरित करने से वे हम बड़ों से भी कहीं आगे तक की सोचने लगते हैं, और धीरे–धीरे अपने लेखन और अधिक कल्पनात्मकता लाने लगते हैं।

मैं प्रत्येक बच्चे या समूह द्वारा लिखे लेख को कक्षा कक्ष में डिस्प्ले करती हूँ और ऐसा करने से मैं पाती हूँ कि बच्चे कक्षा के बाद भी एक–दूसरे के लेखों को पढ़ते हैं और अन्य कक्षाओं के बच्चों को भी अपने द्वारा लिखे लेख को पढ़ने के लिए आमंत्रित करते हैं, और यह सिलसिला लगभग चार –पाँच दिन तक चलता रहता है।

विचारणीय बिन्दु : उपर्युक्त केस स्टडी के लिए निम्नलिखित प्रश्नों पर विचार कीजिए –

- बच्चों के लेखन के पाठक कौन और उसका उद्देश्य क्या है?
- गतिविधियों के दौरान शिक्षकों के पास अपने बच्चों के आकलन के लिए किस प्रकार के अवसर उपलब्ध हैं?
- ध्यान दें कि प्रत्येक गतिविधि में बच्चों ने सहयोगात्मक एवं व्यक्तिगत रूप से किस प्रकार लिखा, और आपकी नज़र में साझा लेखन के सामाजिक लाभ क्या हैं?

लेखन केंद्रित पाठ की योजना :

आप अपनी कक्षा के लिए लेखन केंद्रित पाठ की योजना बना सकते हैं। बच्चों के साथ कार्य करने से पूर्व योजना बनाना आवश्यक है। पाठ कोई सा भी क्यों न हो, लेखन कौशल पर कार्य करने के लिए अतिरिक्त गतिविधियाँ उम्र– स्तर को ध्यान में रखते हुए सृजन की जा सकती हैं। सामान्य प्रश्नोत्तर लिखना या देखकर लिखना एक स्तर तक हो सकता है लेकिन कौशल के विकास के लिए आवश्यक है रचनात्मक लेखन । जिसमें बच्चे अपने विचारों को बिना किसी रुकावट के स्वयं लिख सकें।

आप अपनी कक्षा के लिए लेखन केंद्रित पाठ की योजना हेतु अतिरिक्त सहायता के लिए **केस–1** को संसाधन के रूप में देख सकते हैं।

प्रस्तुत है नीतू जी के विवरण के आधार पर योजना की **शुरुआत का** एक उदाहरण –

शिक्षण–आकलन योजना	पाठ योजना– नीतू जी की साझा लेखन गतिविधि
पाठ/इकाई : अवधारणा/थीम : बच्चों के शब्दों को लेखन में रूपांतरित करना। **सम्पूर्ण कक्षा समूह के लिए अधिगम उद्देश्य :** • विचार, कथन और लेखन के बीच संबंध को स्थापित करने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करना। • संकेत के रूप में चित्रों का उपयोग करते हुए जोड़े/छोटे समूह में विचार–विमर्श को प्रोत्साहित करना।	

• पूरी कक्षा द्वारा कहानी रचना में योगदान देने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करना।

शिक्षण योजना **(1. सामूहिक कार्य 2. उपसमूहों में कार्य 3. व्यक्तिगत कार्य की योजना)**	**सतत आकलन योजना**
सामूहिक कार्य : • सभी बच्चों को चित्रों से परिचित करवाना।चित्रों के बारे में बातचीत करना। • सारे समूह के सहयोग से बनाई गई कहानी को शिक्षक द्वारा पढ़कर सुनाना।	शिक्षक अवलोकन द्वारा – **प्रत्येक बच्चे द्वारा चित्र के साथ किए जा रहे व्यवहार को नोट करना।** **किए गए लेखन व चित्रांकन की जाँच करटिप्पणी लिखना।** **आकलन बिन्दु** • समूह में अपनी बात को अभिव्यक्त कर पाना। • साफ व सुंदर अक्षरों में लिख पाना। • कहानी के अनुसार चित्रांकन कर पाना।
उपसमूहों में • चित्रों के देखने और विचार करने के लिए अवसर देना। • चित्रों के बारे में अपने समूह के विचारों को प्रस्तुत करना।	
व्यक्तिगत कार्य **प्रत्येक बच्चे को उनकी बात कहने का अवसर उपलब्ध करवाना।** **सृजित कहानी का लेखन व चित्रांकन करना।**	

नोट : यह एक नमूना है, आपको तो अपने पाठ की पूरी योजना को बनाना है।

अपने पाठों का नियोजन और उसकी तैयारी क्यों आवश्यक है ?

नियोजन करने से आपके शिक्षण की गुणवत्ता बनती है, आप अपने कार्य के प्रति स्पष्ट और सुसामयिक बने रहते हैं, जो आपकी कक्षा में बच्चोंकी सक्रिय भागीदारी और सीखने के प्रति आकर्षण को बनाने में मदद करता है।प्रभावी नियोजन में कुछ आंतरिक लचीलापन भी सम्मिलित होता है ताकि शिक्षक पढ़ाते समय अपने बच्चों की अधिगम–प्रक्रिया के बारे में कुछ पता चलने पर उसके अनुरूप बदलाव कर सके।अध्यायों की श्रंखला के लिए योजना पर काम करने में बच्चों और उनके पूर्व अधिगम को जानना,पाठ्यक्रम में आगे बढ़ने का क्या अर्थ है और बच्चों के पढ़ने में मदद करने के लिए सर्वोतम संसाधनों एवं गतिविधियों की खोज करना सम्मिलित होता है।

सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में योजना एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है। जो आपको अलग–अलग अध्यायों के साथ ही, श्रंखलाबद्ध रूप से विकसित होते अध्यायों की तैयारी में मदद करते हैं। इसमें हम सोच विचार करते हैं कि बच्चों को क्या सिखाना है, किस तरीके से सिखाना है ? इसके लिए मुझे किन–किन सामग्रियों की आवश्यकता है ? आकलन कब करना है ? इसके लिए क्या उपकरण (Tools) उपयोग में लेने है ? जो बच्चे नहीं सीख पा रहे हैं, उनके लिए किस प्रकार की तैयारी की जानी चाहिए ..आदि ।

अध्याय नियोजन : सुझावित बिन्दु			
अपने बच्चों की प्रगति के लिए आवश्यक बातों के लिए सजग व स्पष्ट रहना।	यह तय करना कि आप कौन से ऐसे तरीके से पढ़ाने जा रहे हैं जिससे कि बच्चे समझेंगे और आपको जो पता लगेगा उसके प्रति अनुक्रिया करने के लिए लचीलेपन को कैसे बनाए रखेंगे।	समीक्षा करना कि अध्याय किस प्रकार चला,कितना आपके बच्चों को सीखने के लिए प्रभावी रहा, जिससे कि आगे के लिए योजना निर्धारण करने में मदद मिले।	जो योजना बना रहे हैं उससे किन कौशलों व उनसे संबंधित किन–किन आकलन सूचकों को देख पाएंगे। जिससे रचनात्मक आकलन को सुनिश्चित किया जा सके।

1. प्रस्तावना :

हम सभी बच्चों के बारे में चिंतित हैं और इसीलिए हम सबका सरोकार इस बात से है कि हर स्कूल एक ऐसी जगह बने जहाँ हर बच्चे को सीखने के मौके मिलें। बच्चों की शिक्षा से जुड़े सभी लोग, विशेषकर शिक्षक इस संबंध में अपने आपको बहुत ही जिम्मेदार मानते हैं। ऐसा उनकी इच्छाओं से जाहिर होता है कि वे सभी बच्चों को उनके गुण और रुचियों के विकास में मदद करने के लिए तत्पर हैं। वे उन्हें विश्वास के साथ अपनी ज़िंदगी का सामना करने के लिए तैयार करना चाहते हैं। शिक्षकों का काफ़ी समय तो इसी बात का पता लगाने में निकल जाता है कि बच्चे स्कूल में कैसा कर पा रहे हैं। बहुत से शिक्षक आकलन को अपने स्कूल की रोज़मर्रा की महत्त्वपूर्ण गतिविधि के रूप में देखते हैं। शिक्षक विद्यालय में दैनिक आधार पर जो कुछ भी करते हैं, बच्चों का आकलन उनका एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। ऐसा क्यों है ?

शिक्षक इसके लिए बहुत से कारण बताते हैं– एक महत्त्वपूर्ण कारण यह जानना है कि बच्चों को जो कुछ भी सीखना चाहिए, क्या वे सीख पा रहे हैं ? दूसरी वजह एक अवधि विशेष में बच्चों की प्रगति के बारे में भी जानकारी प्राप्त करना है। जो भी हो तीसरी वजह, जिसको सिर्फ़ शिक्षक ही नहीं बल्कि हम सभी बहुत ही महत्त्वपूर्ण मानते हैं, वह यह पता लगाना है कि बच्चे की भिन्न–भिन्न विषय/क्षेत्रों में क्या उपलब्धियाँ रहीं। ऐसा शायद इसलिए कि हम बच्चों को 'अच्छी क्वालिटी' (गुणवत्ता) वाली शिक्षा देना चाहते हैं और महसूस करते हैं कि ऐसा तभी संभव हो सकता है जब टैस्ट और परीक्षाओं के ज़रिए पढ़ाए गए विषयों में बच्चों की उपलब्धियों का मूल्यांकन किया जाए। परीक्षणों (टैस्टों) का अपना एक उद्देश्य है पर यदि हम वास्तव में बच्चों को बेहतर तरीके से सीखने में मदद करना चाहते हैं तो हमें यह बात खास तौर से समझने की ज़रूरत है कि टैस्ट/परीक्षाओं में बच्चे द्वारा प्राप्त किए गए अंक और ग्रेड बच्चों की प्रगति या सीखने के बारे में क्या कुछ विशेष बता पाते हैं।

2. आकलन–किसलिए ?

आइए, नीचे दिए गए उदाहरण पर नज़र डालते हैं, एक शिक्षक होने के नाते अपने विद्यालय में इस तरह के हालातों से आपका बहुत बार सामना हुआ होगा।

*यह अध्याय एनसीईआरटी द्वारा तैयार की गई आकलन स्रोत पुस्तिका (प्राथमिक स्तर की कक्षाओं के लिए) से साभार लिया गया है।

एक प्राथमिक विद्यालय में कक्षा चार के बच्चों को पर्यावरण अध्ययन के अंतर्गत उनकी पाठ्यपुस्तक के जल से संबंधित अध्याय पर आधारित एक टैस्ट दिया गया। तीस बच्चों में से अधिकतर बच्चों ने 10 में से 6 अंक प्राप्त किए हैं। दो बच्चे जिनमें से मैथिली के आठ और रमन के 10 में से 3 अंक आए हैं। शिक्षक ने कक्षा में जब अंक बताए, तभी बच्चे रमन के अंक सुनकर हँसे और उसका मज़ाक भी बनाया क्योंकि उसके अंक सबसे कम थे। उस दिन के बाद से रमन ने कभी नहीं चाहा कि वह स्कूल जाए। उसके माता–पिता के लिए उसे स्कूल जाने के लिए तैयार करना, मनाना बहुत ही कठिन था। ये अंक शिक्षक, माता–पिता या मैथिली और रमन की शिक्षा से सरोकार रखने वाले किसी को भी क्या बताना चाहते हैं ? क्या ये अंक यह बता पाएँगे कि दोनों बच्चों ने क्या और कैसे सीखा और वे दोनों क्या–क्या कर सकते हैं ? क्या ये अंक शिक्षकों को बता पाएँगे कि मैथिली और रमन की ज़रूरतों के आधार पर उनके लिए अध्यापन और सीखने की प्रक्रिया में कैसे सुधार लाया जाए ?

क्या ये अंक मैथिली और रमन दोनों बच्चों को उनके सीखने के संबंध में किसी तरह का संकेत दे पाएँगे कि आगे किस तरह का सुधार लाया जा सके ? बच्चों द्वारा प्राप्त किए गए अंक क्या किसी भी तरह से उनके माता–पिता या समुदाय के सदस्यों को उनकी प्रगति और सीखने के बारे में कोई उपयोगी रिपोर्ट या पृष्ठपोषण (Feedback) दे पाएँगे कि दोनों बच्चों में से कौन क्या जानता है ?

दुर्भाग्य से हो क्या रहा है कि इस तरह के मूल्यांकन से कुछ बच्चों को असुरक्षा, तनाव, चिंता और अपमान जैसी स्थितियों का सामना करना पड़ता है जैसा कि रमन के साथ भी हुआ। मूल्यांकन से सिर्फ़ यही पता लगता है कि बच्चे क्या नहीं जानते बजाए इसके कि बच्चे क्या जानते हैं और क्या कर सकते हैं ? इस तरह का मूल्यांकन पाठ्यपुस्तकों में

पढ़ाई गई विषयवस्तु और रटंत प्रणाली द्वारा प्राप्त की गई जानकारी/ज्ञान का आकलन करने तक ही केंद्रित है। अधिकांशतः यह बच्चों में तुलना करने जैसे भाव रखता है और अवाँछनीय प्रतिस्पर्धा को जन्म देता है, यहाँ तक कि मात्र आधे अंक के लिए भी क्या शिक्षक होने के नाते हम चाहते हैं कि सभी बच्चे सीखें ? यदि ऐसा है तो आकलन के ज़रिए हम उनमें क्या खोजते हैं ?

आप इस सच्चाई को तो ज़रूर स्वीकार करेंगे कि इस तरह की स्थितियाँ विद्यालयों में अकसर देखी जाती हैं। स्थितियाँ कुछ महत्त्वपूर्ण सवालों की तरफ़ हमारा ध्यान खींचती हैं– हम वास्तव में किस चीज का आकलन कर रहे हैं ? क्या टैस्टों/परीक्षाओं के अतिरिक्त बच्चों का आकलन करने के कुछ और तरीके भी हो सकते हैं ? क्या अंकों और ग्रेड के रूप में रिपोर्ट करना पर्याप्त है ? आकलन संबंधी सूचनाएँ किस तरह की मदद करती हैं ? हम अपने काम को कठिन बनाए बगैर बच्चों के सीखने के बारे में सूचनाएँ किस तरह की इकट्ठी कर सकते हैं ? आखिरी सवाल बहुत ही महत्त्वपूर्ण है क्योंकि पूरे देश भर में शिक्षक रोज़ाना ही बहुत–सी समस्याओं का सामना करते हैं जैसे– विद्यार्थियों की अधिक संख्या, एक साथ दो–तीन या कभी–कभी तो इससे भी अधिक कक्षाओं को एक साथ बैठाकर पढ़ाना, इसके साथ उन्हें ऐसे बच्चों को पढ़ाना होता है, जो भिन्न–भिन्न पृष्ठभूमि से आते हैं, भिन्न–भिन्न भाषाएँ बोलते हैं और जिनकी विशेष आवश्यकताएँ भी होती हैं। शिक्षकों और उन सभी में, जो चाहते हैं कि बच्चे अपनी अधिकतम योग्यता के अनुसार सीखें, अधिक समय, धैर्य और समझ की ज़रूरत है। इस तरह की स्थितियों में शिक्षकों की मदद किस तरह से की जा सकती है ?

3. बच्चों और उनके सीखने के बारे में समझ बनाना :

एक पल के लिए हमें अपने बचपन की ओर लौटना होगा और वर्तमान समय की कक्षाओं और बच्चों के बारे में सोचना होगा जिन्हें हम पढ़ाते हैं। आप इस बात से तो ज़रूर सहमत होंगे कि हर बच्चे की अपनी पसंद, नापसंद, रुचियाँ, कौशल और व्यवहार के तरीके होते हैं। इस प्रकार हर बच्चे अपने आप में अद्वितीय है। चूँकि प्रत्येक बच्चा अपने आप में एक अद्वितीय व्यक्ति तथा किसी भी स्थिति के प्रति अपने ही ढंग से प्रतिक्रिया करता है। इसलिए बच्चों का आकलन करते समय यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि हम उनमें पाई जाने वाली भिन्नताओं को पहचान सकें और इस सच्चाई को भी स्वीकार करें कि वे सीखने के दौरान भिन्न तरीके से प्रतिक्रिया करते और समझते हैं।

आपने इस बात पर ज़रूर गौर किया होगा कि जब बच्चे पहली कक्षा में प्रवेश करते हैं तब उनके पास बहुत से अनुभव होते हैं और ज्ञान के कुछ प्रकारों का आधार भी होता है। बच्चे न तो 'कोरी स्लेट' हैं, जिन्हें उन सूचनाओं और ज्ञान से भरना है जो शिक्षक के ही पास है। आमतौर पर ऐसा ही सोचा जाता है। बच्चे विद्यालय में जिन अनुभवों के साथ आते हैं और जो भी वे जानते हैं उन्हीं को सीखने की प्रक्रिया का आधार बनाना महत्त्वपूर्ण है। बच्चे पहले से जो भी जानते और समझते हैं उसके आधार पर ही आगे कुछ सिखाने की योजना बननी चाहिए। इसके साथ ही यह समझना भी आवश्यक है कि प्राथमिक स्तर पर बच्चे कैसे सीखते हैं क्योंकि इसी आधार पर सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के दौरान बच्चों के आकलन की प्रक्रिया सुनिश्चित की जा सकती है। कुछ महत्त्वपूर्ण पहलू इस तरह हैं–

- सभी बच्चे सीख सकते हैं यदि उन्हें अपनी ही गति से सीखने दिया जाए और सीखने के अपने ही तरीकों का अनुसरण करने दिया जाए,
- बच्चे स्वाभाविक तौर पर खेल के माध्यम से सीखते हैं। वे एक–दूसरे से बहुत अच्छी तरह सीखते हैं जब वे वास्तव में किसी काम को करने की प्रक्रिया से जुड़े होते हैं,
- सीखना एक सतत प्रक्रिया है इसलिए 'सीखना' सिर्फ़ विद्यालय में ही नहीं होता। अतः कक्षा में सीखने की प्रक्रिया को घर में जो कुछ भी हो रहा है उससे जोड़ा जाना ज़रूरी है,
- बच्चे अपने ज्ञान का निर्माण स्वतः करते हैं और केवल तभी नहीं सीखते, जब शिक्षक पढ़ाते हैं। प्राथमिक स्तर पर बच्चे ठोस अनुभवों, खेल, खोजबीन, बहुत–सी चीज़ों के साथ परीक्षण और बहुत–सी गतिविधियों को वास्तविक रूप से करते हुए बेहतर और अधिक आसानी से सीखते हैं,
- बच्चों के सीखने की दिशा एक सीधी रेखा में नहीं चलती, वह घुमावदार होती है यानी कि वे पहले सीखी गई अवधारणाओं तक पुनः पहुँचते हैं और इससे उनकी समझ बेहतर ही होती है,

- सीखने के कार्य से जुड़ी हुई है, बच्चों द्वारा अवलोकित और महसूस किए गए तथ्यों से जुड़ाव बना पाने की प्रक्रिया जो कुछ भी नया सीखा जा सकता है वह दिए जा रहे तथ्यों और सूचनाओं पर ही आधारित नहीं होता पर उन सबसे भी जुड़ा हुआ होता है और उस सबसे जोड़ा जा सकता है जो विद्यालय, घर या कहीं भी हासिल किया गया होगा। इसलिए सीखना सीधी रेखा में कभी भी नहीं हो सकता है।
- सीखना 'समग्रता' में ही संभव है न कि तब जब ज्ञान को छोटे–छोटे टुकड़ों में तोड़ा जाए या विषयों में बाँटा जाए। इसलिए सीखने के लिए समेकित विधि ही बेहतर है,
- यह देखा जाता है कि प्राथमिक स्तर पर बच्चे एक–दूसरे के साथ अंतःक्रिया (खेलते–कूदते, हँसते–गाते) करते हुए बेहतर तरीके से सीख पाते हैं,
- सीखने के दौरान बच्चे बहुत–सी गलतियाँ भी करते हैं जो उनके सीखने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग हैं। इसलिए गलतियाँ करके ही वे सीखते हैं।

उनके सीखने को खेल, अनुकरण, अभ्यास, मूर्त से अमूर्त की ओर ले जाकर, सरल से जटिल की ओर ले जाकर बढ़ावा दिया जा सकता है और समूची अधिगम प्रक्रिया को आनंदमयी और स्फूर्तिदायक बनाकर भी। इसका तात्पर्य यह है कि सभी बच्चे दी जा रही सूचनाओं के अर्थ अपने पूर्व अनुभवों और अधिगम के आधार पर अपनी ही तरह से बना लेते हैं। यही प्रक्रिया बच्चे को अपनी समझ बनाने और निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित करती है। ज्ञान तक पहुँचने, उसे हासिल करने की हर बच्चे की अपनी एक अनोखी पद्धति होती है। यह प्रक्रिया लगातार चलती रहती है।

4. विद्यालय और कक्षा की समझ

कक्षा में चल रही सीखने–सिखाने की प्रक्रिया काफ़ी हद तक विद्यालय, परिवेश और उसकी संस्कृति पर निर्भर करती है। एक सुरक्षित चिंतामुक्त, सुविधाजनक और खुशनुमा विद्यालयी परिवेश बच्चों को बेहतर तरीके से सीखने और कुछ अधिक हासिल करने में मदद करता है। इस प्रयोजन को ध्यान में रखते हुए विद्यालय के लिए ज़रूरी है कि विद्यालय में आवश्यक सुविधाएँ हों जैसे– सीखने की सामग्री, सहायक सामग्री, उपकरण और गतिविधियाँ आयोजित करने के लिए साथ–साथ काम करने तथा खेलने के लिए उपयुक्त स्थान। प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों के सीखने को खेल विधियों और बाल केंद्रित पद्धतियों द्वारा उन्नत किया जा सकता है। आजकल 'बाल केंद्रित' शब्दावली बहुत अधिक प्रचलन में है, इससे क्या अभिप्राय है ? हम दो कक्षाओं पर नज़र डालते हैं, एक शिक्षक केंद्रित है और दूसरी बाल केंद्रित है, दोनों की गतिविधियों पर नज़र डालने से 'बाल केंद्रित' के अर्थ स्पष्ट होंगे। लस्वीर आगे दी गई है।

इन तस्वीरों के आधार पर निश्चित तौर पर हम 'बाल केंद्रित' कक्षा में ही काम करना चाहेंगे और इस तरह की व्यवस्था वाली कक्षा में आकलन के लिए –

- बाल केंद्रित पद्धतियाँ इस्तेमाल होंगी, शिक्षार्थियों के बीच पाए जाने वाले अंतरों को ध्यान में रखा जाएगा,
- आकलन प्रत्येक बच्चे की ज़रूरत, गति और सीखने के तरीकों को ध्यान में रखते हुए किया जाएगा,
- लचीलापन लिए हुए होगा,
- सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग होगा,
- सतत और सारगर्भित होगा।

यहाँ दिखाई जा रही तस्वीर उस कक्षा की तस्वीर है जिसे वास्तव में हम चाहते हैं। इसे बाल केंद्रित कक्षा कहा जाता है। इस तरह की कक्षाओं में आकलन की प्रक्रिया कुछ इस तरह की होगी–

- बाल केंद्रित और कक्षा में पाई जाने वाली विविधता को समझने वाली प्रक्रिया,
- हर बच्चे की ज़रूरत, गति और सीखने की शैली के अनुसार चलने वाली प्रक्रिया,
- लचीली ज़रूरत के अनुसार तथा बच्चे की आयु और स्तर के अनुसार चलने वाली प्रक्रिया,
- सीखने–सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग सतत और सारगर्भित।

भाषा शिक्षण में साहित्य की विभिन्न विधाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका है जिनके माध्यम से बच्चों में हिंदी विषय की बहुआयामी समझ विकसित की जा सकती है। कहानी, कविता, गीतों, नाटकों आदि के माध्यम से बच्चे अपनी सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ते हैं और इससे उनको अपने अनुभव विकसित करने और दूसरों के प्रति संवेदनशील होने के अवसर मिलते हैं।

सतत एवं व्यापक आकलन/मूल्यांकन के संदर्भ में विधाओं की समझ, भाषा शिक्षण में उनकी भूमिका एवं बेहतर पाठ नियोजन की विशेष भूमिका है।

रचनाओं के विभिन्न फलक और आकलन

भाषा यथार्थ को उद्घाटित करती है, पर साथ ही इसमें कई कल्पनापरक तत्त्व भी मौजूद हैं। पद्य, गद्य और नाटक हमारी भाषिक संवेदना को धार प्रदान करने के साथ–साथ हमारे जीवन के सौंदर्यपरक पहलू को समृद्ध करते हैं, साथ ही हमारे पढ़ने–लिखने की क्षमता के स्तर को भी ऊँचा उठाते हैं। भाषा किस्से–कहानियों, कहावतों, मज़ाक, नकल को भी अंतर्निहित किए होती है जो हमारे रोज़मर्रा के जीवन के बहुत बड़े व महत्त्वपूर्ण हिस्से होते हैं और कहीं से भी यह ऐसी स्वायत्त इकाई नहीं होती जो सांसारिक क्रियाकलापों से मुक्त हों। बच्चों के साथ कार्य करने के दौरान हम उनके लिए ऐसा माहौल तैयार करें कि बच्चे भाषा के सौंदर्यपरक पहलू की सराहना करें जो अंततः उन्हें भाषिक रचनात्मकता की ओर अग्रसर करने में मदद करेगा।

सौंदर्यबोध (कविता)

कविता भाषा की सबसे कलात्मक अभिव्यक्ति है। सामान्य से कथन में शब्दों के हेर–फेर से विशेष अर्थ भर देना कविता का रूप ले लेता है। कविता साहित्य की सबसे पुरानी विधा है और बच्चे की भाषिक क्षमता बढ़ाने के लिए कविताओं से उसकी दोस्ती बनी रहे, यह बहुत ज़रूरी है। कविता के मूल में संवेदना है, राग तत्त्व है। यह संवेदना सम्पूर्ण सृष्टि से जुड़ने और उसे अपना बना लेने का बोध है। कविता का जन्म हुआ तो वाचिक परंपरा के रूप में था पर अब ये लिखित रूप में हमारे पास मौजूद हैं। शब्दों से खेलना, उनसे मेलजोल बढ़ाना, शब्दों के भीतर सदियों से छिपे अर्थ की परतों को भिन्न–भिन्न रूपों में प्रस्तुत करना यह सब कविता की दुनिया में प्रवेश कराता है।

कविता पर कार्य करने के सुझावात्मक तरीके

बच्चों के साथ कविता को पढ़ाने के तरीकों को कुछ अलग तरीके से देखें और निम्न प्रकार से कक्षा कक्ष में कार्य करवाते हुए आकलित भी कर सकते हैं।

- बच्चों को स्वयं से कविता पढ़ने दें। एक बार तो अवश्य कुछ बच्चे मन–ही–मन पढ़कर खुश होंगे, कुछ बोल–बोल कर पढ़ना चाहेंगे। कविता के प्रति समझ बनाने के ये उनके अपने तरीके हैं। पढ़ते–पढ़ते बच्चे उसमें स्वतः ही लय खोज लेंगे।
- अब कविता के सस्वर वाचन की बारी है। बच्चों के सामने अपनी ओर से वाचन प्रस्तुत करें। उच्चारण, लय, ध्वनि का ध्यान रखें पर कदापि यह अपेक्षा न करें कि सभी बच्चे आपके तरीकों को अपनाएँ। कम से कम पहली बार तो कदापि नहीं।
- अब आती है अर्थ बताने की बारी। अर्थ समझने के लिए ज़रूरी है कि बच्चों को कविता के बिंब (छवि) पर ध्यान देने के लिए कहें। कविता पढ़कर जो बिंब मस्तिष्क में उभर रहे हैं वे अर्थ खोजने में मदद करेंगे। यह ध्यान रखने की बात है कि कभी भी कविता को खंडों में रखकर न तो समझें और न ही समझाएँ। उसे समग्र रूप में समझने–समझाने की ज़रूरत है।

  – बच्चों की कक्षा में कविता पढ़ाने से पहले स्वयं बार–बार पढ़ी जाए ।

  – कविता की पृष्ठभूमि पर बच्चों से बातचीत करें।

– कविता कहने के संदर्भ में बच्चों को बोल–बोल कर कविता को पढ़ने को कहें।
– आपके द्वारा कविता का वाचनालय के साथ हो।

बच्चों का आकलन

अपनी अनुभूति, सोच आदि बातों को बच्चे अपनी व्यक्तिगत टिप्पणी द्वारा प्रस्तुत करें। यदि ऐसा है तो, कविता पठन के दौरान इसकी अवधारणा को समझने में बच्चों द्वारा तैयार किए गए कई ऐसे साक्ष्य होंगे। जैसे– (तालिका, मनपसंद लाइन, औचित्य के संदर्भ में टिप्पणी आदि।)

इन प्रक्रियाओं से गुजरने वाला बच्चा कविता के मूल विचार, उसके भाव, शब्दों की भंगिमा आदि बातों को कितना पहचान पाया है? इस बात को समझने के लिए टिप्पणियाँ मदद करेंगी। सीखने की इस प्रक्रिया के दौरान बच्चे द्वारा निर्मित ज्ञान के कौन–कौन से घटक का आकलन कर सकते हैं ? निम्न हैं –

- कविता के विचार को स्पष्ट करने के लिए उचित शब्द/वाक्यों का चुनाव।
- स्वयं के अवलोकन प्रस्तुत करने में उपयोग की भाषा, शब्द एवं वाक्य।
- सौंदर्य के संदर्भ में चुने गए शब्द एवं वाक्य।
- कविता का अर्थ, मूलभाव को समझकर उचित लय, ताल एवं भाव में प्रस्तुत करने की संभावना को पहचाना ।

इसी के साथ बच्चे के सीखने की स्थिति को आपने भी नोट करना होगा। जैसे–

- पूर्व में निर्मित सीखने के तथ्यों को प्रस्तुत करने की स्थिति।
- बच्चे ने बेहतर कैसे किया है, उस तरीके को नोट करना।
- अनुभव लेखन में स्वयं की टिप्पणी नोट करना।

टिप्पणी तैयार करने में प्रत्येक बच्चे द्वारा इस्तेमाल किया गया तरीका कितना सही है या उससे उसे कितनी मदद मिली, इसका आकलन करना। यह पूर्व से आगे की प्रक्रिया में कितना आगे बढ़ा है इसे समझने का प्रयास करें। इस प्रकार की स्वयं की टिप्पणी तैयार करने के लिए सहायक पूर्व क्रियाओं के बारे में लिखा जाए। जैसे–

- क्रियाओं में स्वयं के लिए सबसे आसान व सबसे कठिन दोनों तरीकों के बारे में विमर्श किया है।
- कविताओं को पढ़ने में अन्य आसान तरीकों को भी बताया है।... आदि।

कविता गायन

कविताएँ लय, ताल एवं भाव के साथ सामूहिक, व्यक्तिगत रूप से गाकर प्रस्तुत करने का आकलन किया जाना है। इसे सीखने की प्रक्रिया की ओर ले जाने के लिए कुछ सवालों की आवश्यकता होगी–

- आप इस कविता को किस प्रकार लय में पिरोएंगे ?
- कविता ने आपकी किन यादों को ताजा किया है ?
- आपकी यादें कविता को लयबद्ध करने में कैसे मदद करेंगी ?
- लाइनों को क्रमबद्ध करके लय तैयार कर सकेंगे क्या ?

बच्चे किस प्रकार से कविता को याद करने, लय बनाने का प्रयास करते हैं, क्या.....

- पंक्तियों के विन्यास एवं रूप देखकर लय तैयार करते हैं।
- पंक्तियों को थोड़ा–थोड़ा लेकर लय प्रदान करते हैं।
- समान तरह की अन्य कविताओं को याद करते हैं।

लय तैयार करने की प्रक्रिया पूरा होने के बाद प्रत्येक बच्चा अपनी व्यक्तिगत लय व समूह के अन्य बच्चों की सबसे बढ़िया लय को पहचानने का कार्य करें। इस कार्य के लिए बच्चे स्वयं/ समूह कार्य के ज़रिए चैकलिस्ट तैयार करें या आप भी पूर्व से तैयार चैकलिस्ट बच्चों को दे सकते हैं। उदाहरण के लिए चैकलिस्ट इस प्रकार की हो सकती है–

कविता गायन			
क्र.सं.	**विशेषता**	**हाँ**	**नहीं**
1.	लय अच्छी है।		
2.	भाव–बढ़िया है।		
3	अच्छी तरह गाया है।		
4	सुनने में अच्छा लगा।		

कहानी (कथा–रचना)

गद्य साहित्य की विधाओं में कहानी सबसे अधिक लोकप्रिय विधा है। संघर्ष एवं कौतूहल के साथ–साथ कहानियों में मनोरंजन की क्षमता होती है। पढ़ने की कुंजी अनुमान लगाने का कौशल है। इस कौशल के विन्यास में कहानी आश्चर्यजनक योगदान करती हैं। नियमित रूप से इन्हें सुनने से बच्चे भाषा की बुनियादी संरचनाएँ ग्रहण करते हैं।

कहानियों को स्वर में उतार–चढ़ाव एवं हावभाव के साथ बच्चों को सुनाएँ ताकि वे कहानी में खो जाएँ। पाठ्यपुस्तक में दी गई कहानियों के अतिरिक्त पारंपरिक कहानियों ; जैसे– पंचतंत्र, जातक कथाएँ, विक्रमादित्य की कहानियाँ आदि और अलग–अलग देशों एवं क्षेत्रों की लोककथाएँ भी बच्चों को पढ़ने के लिए दें व आप स्वयं भी सुनाएँ। कहानी सुनते समय बच्चे अनुमान लगाते हैं कि आगे क्या होगा। अनुमान का सही सिद्ध होना बच्चे को आनंदित तो करता ही है, उनका विश्वास भी बढ़ाता है। यही विश्वास पढ़ने की क्षमता के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कहानी बच्चे के लिए सार्थक दुनिया रचती हैं।

बच्चों के साथ कहानी सुनने–सुनाने, पढ़ने आदि के साथ–साथ कहानी कौशल को बढ़ाने के लिए अन्य गतिविधियों की संरचना करते हुए कक्षा–कक्ष में बच्चों को संलग्न किया जाना चाहिए। जैसे–

- अधूरी कहानी पूरी करना.....।
- विभिन्न शब्दों के ज़रिए नयी कहानी की संरचना करना,
- सूचनाओं के ज़रिए कहानी बनाना,
- चित्रों में हो रही घटनाओं के आधार पर कहानी की संरचना करना आदि।
- सुनी/पढ़ी कहानी के बारे में **बातचीत** के ज़रिए उस **कहानी का विश्लेषण** बच्चों के साथ करना।

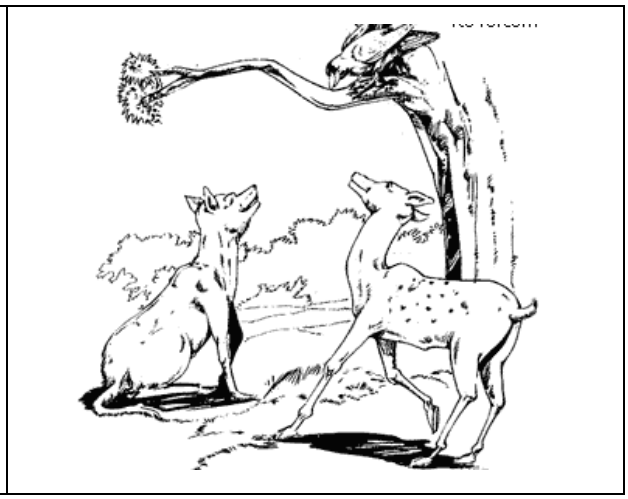

कहानी लेखन के दौरान निम्नलिखित बिंदुओं का आकलन किया जाना है।

- कहानी के पात्रों के अनुरूप संवाद शामिल किया।
- कहानी में स्थान का विवरण दिया है।
- समस्या के समाधान के रूप में कहानी को लिखा है।
- आवश्यकतानुरूप अनुच्छेदों में विभाजित कर लिखा है।

किसी भी कहानी की चैकलिस्ट कुछ इस प्रकार से तैयार की जा सकती है :

स्व आकलन			
क्र.सं.	**विशेषता**	**हाँ**	**नहीं**
1.	कहानी का प्रारंभ व अंत समझ में आया और सही लिखा। (तारतम्यता बनी रही)		
2.	कहानी को पूरे वाक्य में लिख गया।		
3	घटनाक्रम को क्रम से लिखा गया।		
4	लेख सुन्दर था।		

सस्वर पठन

विविध प्रकार की रचनाएं (गद्य/पद्य) उनकी प्रस्तुति के अनुरूप श्रोताओं के मन को आकर्षित करने लायक अर्थ, उचित लय, उच्चारण में शुद्धता, भाव आदि से प्रस्तुत करना, सस्वर पठन का उद्देश्य है।

सस्वर पठन को देखने के लिए कौन–कौन से सूचक हो सकते हैं :

सस्वर पठन			
क्र.सं.	**विशेषता**	**हाँ**	**नहीं**
1.	अटक–अटक कर पढ़ा		
2.	मात्राएं ठीक ढंग से पढ़ पाया/पायी।		
3	प्रवाह के साथ पढ़ा		
4	कुछ शब्द/वाक्यों को पढ़ा		

नाटक (प्रस्तुति/रचना)

नाटक नाम के व्यावहारिक रूप से बच्चे कक्षा–4 में परिचित होते हैं फिर भी कथा/कहानी के संदर्भ को नाटक बनाना, मूकाभिनय, रोलप्ले आदि नाटक से संबंधित क्रियाओं को बच्चे कक्षा–3 से करते हैं। कहानी के पात्रों के स्वभाव, घटनाएँ, दृश्यों की क्रमिकता, पात्रों के लिए उचित संवाद आदि के संदर्भ में बच्चे द्वारा निर्मित ज्ञान को नाटक रचना में आकलित करते हैं। एक नाटक तैयार करने में तथा समूह में प्रस्तुत करने की जानकारी का आकलन प्रस्तुति के माध्यम से ही किया जाता है।

- कहानी, सूचनाएँ, चित्र, समस्या आदि में से नाटकीयता के संदर्भ , विचार या घटना को पहचानना।
- संदर्भ ,घटना, पात्रों का समय, स्थान व उनके भावनात्मक स्थिति के अनुसार वातावरण का अनुमान लगाना।
- दृश्य को प्रस्तुत करने, संवाद तैयार करने की प्रक्रिया आदि कक्षाकक्ष में चल रही क्रिया के दौरान।

नाटक –रचना में प्रस्तुत व्यावहारिक क्रिया में बच्चे द्वारा निर्मित ज्ञान के कौन–कौन से घटक शामिल करने हैं, निम्न हैं–

- घटना के अनुसार स्थान एवं संदर्भ, दृश्य में हैं।

- पात्रों की उम्र, आदत, रूप आदि के अनुसार संवाद तैयार किए हैं। (उचित शब्द, वाक्यों की शैली, आश्चर्य, ज़िद आदि के लिए उचित शब्द)
- संवाद के बीच पात्रों की प्रवृत्ति, भाव, क्रिया आदि।
- नाटक में नेपथ्य (पीछे) से बोले जाने वाले संवादों को कोष्ठक में लिखा गया है।
- स्टेज़ पर होने वाले संवाद के साथ–साथ पीछे से संगीत–ध्वनि और गीत आदि का समावेश भी नाटक में किया गया है।

नाटकीकरण की प्रक्रिया विकसित करना और नाटक प्रस्तुत करना दोनों ही समूह–कार्य हैं। यहाँ समूह कार्य के सूचकों के साथ–साथ नाटकीकरण के ज्ञान को कैसे आकलित कर सकते हैं, उसके घटक कौन–कौन से हैं, प्रस्तुत हैं–

- दृश्य में क्रमबद्धता के साथ–साथ नाटकीयता भी है।
- घटना का स्थान स्पष्ट है।
- अंग संचालन एवं भाव दृश्य के अनुरूप उचित हैं।
- पात्रों के स्वभाव, भावनात्मक अवस्था आदि को शामिल करते हुए उचित उतार–चढ़ाव, भाव आदि के अनुसार शब्दों का प्रयोग किया है।

आत्मकथा

स्वयं के जीवन के अनुभव, दूसरों को रुचिकर लगने के तरीके से प्रस्तुत करना **आत्मकथा** की विशेषता है। विविध आत्मकथा के भाग पढ़ने से बच्चों के मनपसंद संदर्भ व संदर्भ के ज़रिए उनके याद किए अनुभव, भावना आदि मौखिक या लिखित रूप में बाहर आते हैं। ऐसे में स्वयं के जीवन के अनुभवों को, दूसरों को रुचिकर लगने वाले तरीके से शेयर करने के बारे में बच्चे सोचते हैं। बच्चे स्वतंत्र रूप से आत्मकथा लिखने से पूर्व आत्मकथा के अलग–अलग भाग जाँच करके, उसकी विशेषता पहचानते हैं। आत्मकथन के लिए उचित स्रोत पहचानना (डायरी, प्रगतिपत्रक, जन्मतिथि प्रमाणपत्र, परिवार वालों की बातचीत) आदि। प्रक्रियाओं से गुज़रना होगा। ऐसा है तो आत्मकथा में क्या–क्या परिलक्षित होता है, निम्न बिंदु मददगार होंगे –

- प्रस्तुति की शैली में विविधता; जैसे– परिवार की पृष्ठभूमि से संबंधित, गाँव के विवरण से संबधित, अच्छे–बुरे अनुभव से संबंधित।
- भाषा शैली का चुनाव (सरल, दिल को छूने वाले भाव एवं दृश्यात्मक शैली..आदि। कम शब्दों में)
- शीर्षकों में विविधता।
- अपने बालजीवन में होने वाले अनुभवों की प्रस्तुति।

आत्मकथा रचना का आरंभ **डायरी** से होता है। अतः बच्चों को अपने दैनिक जीवन में होने वाले अनुभवों को लिखने के लिए प्रेरित करें।

पत्र लेखन

पत्र बच्चों को अपने विचारों एवं अनुभवों को खुलकर अभिव्यक्त करने का मौका देते हैं। बशर्ते उन्हें हम अवसर दे पाएँ। पत्र में बच्चे अपनी उन भावनाओं को भी लिख पाते हैं। जिनके बारे में शायद वे किसी अन्य से खुलकर बातचीत न कर पाएँ। इसलिए पत्र में बच्चों की भावनात्मक अभिव्यक्ति अधिक होती है।

बच्चों को विभिन्न प्रकार के पत्रों को पढ़ने के लिए दें। पत्र पर कार्य करवाने में निम्न बिंदुओं को ध्यान में रखा जा सकता है :

- स्वयं के स्तर पर अपने मित्र एवं पारिवारिक सदस्यों के नाम रचनात्मक लेखन करना।
- पत्र का निर्धारित प्रारूप में लेखन करना।
- पत्र में बच्चों की रचनात्मकता को अवसर प्रदान करना।
- आत्मीयता एवं भावों की अभिव्यक्ति करना।

कक्षा कक्षीय शिक्षण,अधिगम में कार्यपत्रकों की अपनी विशिष्ट भूमिका रही है। सीखने–सिखाने एवं आकलन के टूल के रूप में शिक्षक के लिए ऐसे कार्यपत्रकों की आवश्यकता है जो कि किसी भी अवधारणा, पाठ, इकाई आदि के सन्दर्भ में बच्चों के सीखने को बढ़ाने (inhance)में, अभ्यास करने में सहायक हों और एक आकलन टूल के रूप में भी मददगार हों।

कार्यपत्रकों की रचना में इस बात की ओर भी ध्यान देने की आवश्यकता होगी –

किसी पाठ से बाँधने की जगह स्वतंत्र रूप से भाषाई कौशलों को बढ़ाने में मदद दे सकें।

बच्चों को काम करने में खुशी व मजेदार अनुभव दे सकें ।

गतिविधियों की विविधता हो, जिससे कि अवधारणा का ठीक से अभ्यास/दोहरान हो सके।

सवाल या प्रश्न आसानी से समझ आ सकें, यदि घर पर कार्य करने के लिए दिया जाए तो, माता–पिता भी प्रश्नों को समझकर अपनी निगरानी में कार्य करवा सकें।

कक्षा 1 से 3 तक अपेक्षाकृत बड़े अक्षर हों।

चित्रों में स्पष्टता हो।

दो प्रकार के कार्यपत्रकों को विशेष रूप से देखा जा रहा है–

- अभ्यास कार्यपत्रक
- आकलन कार्यपत्रक

अभ्यास कार्यपत्रक : ये वे कार्यपत्रक हैं जो कि बच्चों को किसी अवधारणा को समझने के बाद अभ्यास करने की दृष्टि से आवश्यक हैं, जिससे कि बच्चों की कार्यकुशलता भी बार–बार उस पर अभ्यास करने से बढ़ती है। इन कार्यपत्रकों में एक अभ्यास कार्यपत्रक के अंतर्गत एक या दो ड्रिल ही हों तो बेहतर रहेगा।

आकलन पत्रक : आकलन पत्रकों को भी दो प्रकार से देखा जाना चाहिए ।

1. **सतत रचनात्मक आकलन** : सतत रूप से जो कार्य किया जा रहा है, उसके लिए कोई अवधारणा या यूनिट तय करके छोटे–छोटे हिस्सों में आकलन पत्रक के रूप में।

2. **योगात्मक आकलन** : इसके अंतर्गत किसी एक निश्चित अवधि के लिए निर्धारित अधिगम उद्देश्यों के सापेक्ष उस टर्म के पूरा होने के बाद । टर्म से संबंधित मुख्य अवधारणाओं और कौशलों के बढ़ते क्रम के रूप में। यहाँ पर एक और खास बात पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है कि भाषाई कौशलों के बढ़ते क्रम में पूर्व की अवधारणाओं को समेकित करते हुए अगले टर्म में भी उनका समावेश होना चाहिए, जिससे कि भूलने की स्थिति न हो और उत्तरोत्तर बढ़ते क्रम में कौशलों में अभिव्यक्ति की स्थिति बेहतर बनती जा सके।

ब्लू प्रिंट

आकलन के कार्यपत्रकों को बनाने से पूर्व आवश्यक होता है उससे संबंधित ब्लू प्रिंट तैयार करना। जिससे इस बात को ठीक से आकलित किया जा सके कि किस कक्षा के लिए किस प्रकृति के कितने प्रश्न रखे जाने चाहिए? प्रश्नों के प्रकार क्या होंगे? किस कौशल के अंतर्गत किस प्रकृति के कितने प्रश्नों का रखा जाएगा और क्यों रखा जाएगा? का एक खाका बनाते हुए उसके आधार पर प्रश्नों का चयन किया जाना आवश्यक होता है।

ब्लू प्रिंट का एक नमूना यहाँ दिया गया है –

1. हिन्दी भाषा की दक्षताएँ

- सुनने और पढ़ने के माध्यम से विचारों को समझने तथा वर्तनी का प्रयोग व समझ की क्षमता।
- तार्किक अनुक्रम एवं रचनात्मकता के साथ लिखने की क्षमता।
- विभिन्न संदर्भों में व्यावहारिक व्याकरण को उपयोग करने की क्षमता।

2. प्रश्नों की संख्या :

स्तर	प्राथमिक (1 से 5)				
	कक्षा 1 व 2		कक्षा 3 से 5		
मौखिक कार्य	4 प्रश्न		4 प्रश्न		
उपसमूह गतिविधि	1 विधा चर्चा/बातचीत		1 विधा – चर्चा		
लिखित टूल	पठन कौशल	लेखन कौशल	पठन	लेखन	व्याकरण
	4	5	4	4	2
लिखित कुल प्रश्न	**14**		**15**		

3. प्रश्नों का स्तर एवं श्रेणी

स्तर	श्रेणी	प्रकार
सरल/आसान	ज्ञान – प्रत्यास्मरण, समझ, अनुप्रयोग	• बहु विकल्पनात्मक (वैकल्पिक/सही और गलत/ रिक्त स्थान/वर्गीकरण जाँच) • निबन्धात्मक, लघु उत्तरात्मक
मध्यम स्तर	अनुप्रयोग, विश्लेषण	
उच्च स्तरीय विचार युक्त	अनुप्रयोग, मूल्यांकन, रचनात्मक	

आगे इससे संबंधित कुछ कार्यपत्रकों के नमूने दिए जा रहे हैं, जो आपके लिए उपयोगी साबित होंगे ।

Bodh Shiksha Samiti

बोध शिक्षा समिति, जयपुर (राज.)

अभ्यास कार्यपत्रक

विषय : हिन्दी कक्षा : 1

शाला का नाम : ---------- रोल नं. : ----------

विद्यार्थी का नाम : ---------- दिनाक : ----------

पिता का नाम : ---------- माता का नाम : ----------

लेखन कौशल

शब्द पहचान एवं लेखन अभ्यास –

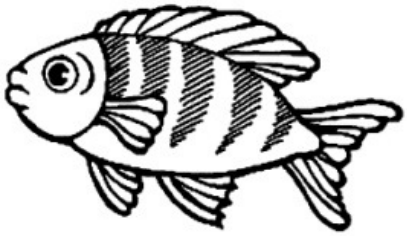

मछली

मछली मछली

मछली मछली

मछली मछली

मछली मछली

शिक्षक हस्ताक्षर एवं टिप्पणी :.....

विषय : हिन्दी कक्षा : 1

शाला का नाम : ---------- रोल नं. : ----------

विद्यार्थी का नाम : ---------- दिनाक : ----------

पिता का नाम : ---------- माता का नाम : ----------

पठन कौशल

1. चित्र के नाम के पहले अक्षर से मिलान कीजिए –

घ		प
श		स
ग	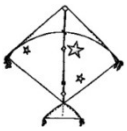	म
क		त
द		अ
र		न
ल		ब
ट	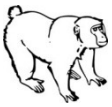	न

विषय : हिन्दी कक्षा : 1

शाला का नाम : ---------- रोल नं. : ----------

विद्यार्थी का नाम : ---------- दिनाक : ----------

पिता का नाम : ---------- माता का नाम : ----------

पठन कौशल

1. चित्र का नाम से मिलान कीजिए –

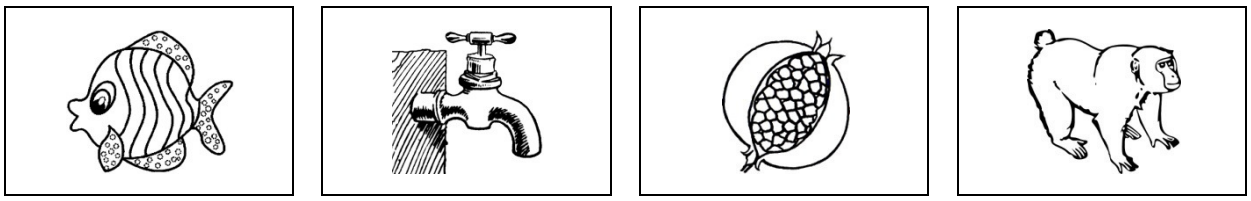

बन्दर	मछली	नल	अनार

2. पहचानकर गोला लगाइए –

(ट , अ , ल)

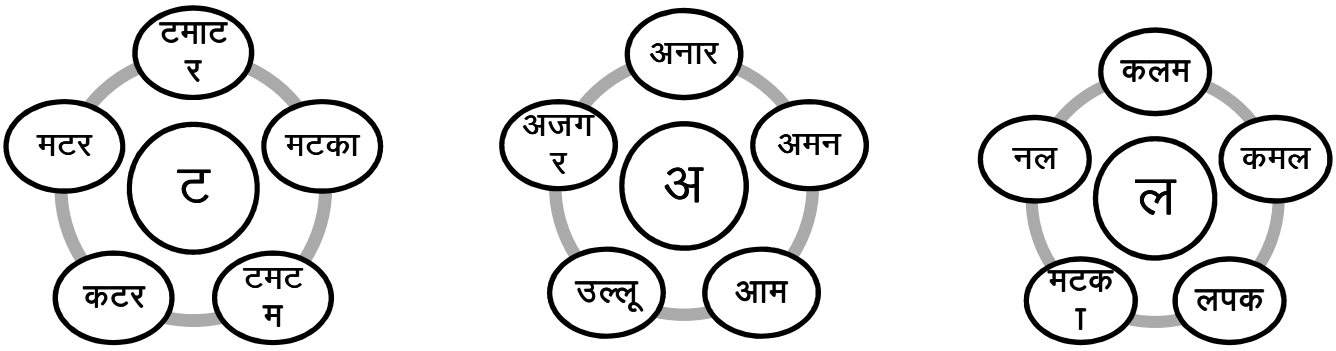

3. नीचे दिए गए वर्णों से शुरू होने वाले शब्दों के नामों के चित्र बनाइए –

प न

4 बिन्दु मिलाकर अक्षर लिखिए –

ब	न	प	अ
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....

5. चित्र की सहायता से शब्द पूरा कीजिए –

			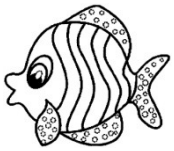
____प	____नार	____स	____छली

शिक्षक आकलन टिप्पणी.....

.....

.....

शिक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर दिनांक : .....

Bodh Shiksha Samiti

बोध शिक्षा समिति, जयपुर (राज.)

योगात्मक आकलन प्रप9त्र

विषय : हिन्दी | कक्षा : 1

शाला का नाम : ---------- रोल नं. : ----------

विद्यार्थी का नाम : ---------- दिनाक : ----------

पिता का नाम : ---------- माता का नाम : ----------

पठन कौशल

1. पढ़कर मिलान कीजिए –

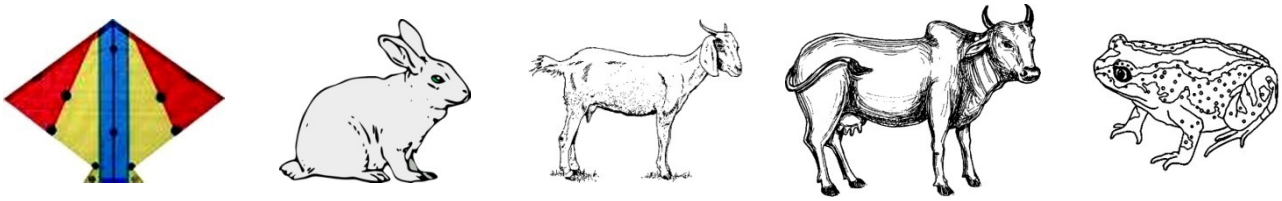

गाय | मेंढक | पतंग | बकरी | खरगोश

2. चित्र पढ़कर सही शब्द पर सही (✓) का निशान लगाइए –

भन्दर/बन्दर | चिड़िया/चीड़या | दादा/दादी | चहा/चूहा

3. चित्र पढ़कर शब्द पूरा कीजिए –

ब__ख | ब__ग__ | __जर | अ____

4. चित्रों को क्रम दीजिए –

☐ ☐ ☐ ☐

पठन कौशल

5. पढ़िए और देखकर लिखिए –

सब	पलंग	बरसात	अदरक
_____	_____	_____	_____
_____	_____	_____	_____

6. नीचे बने चित्रों के नाम लिखिए –

_____

_____

_____

_____

7. मटकी में लिखे अक्षरों से दो और तीन वर्ण वाले शब्द बनाकर लिखिए –

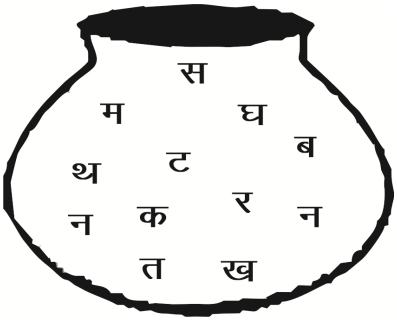

दो वर्ण वाले	तीन वर्ण वाले
घर	बटन
_____	_____
_____	_____
_____	_____

8. चित्र की जगह शब्द लिखकर वाक्य फिर से लिखिए –

(क) यह 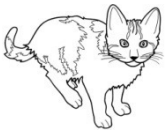 है।

_____

(ख) यह एक है।

_____

(ग) जा रहा है।

_____

(ख) बकरी 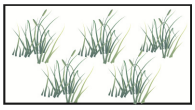 खा रही है।

_____

9. अपना और माँ का नाम पूरे वाक्य में लिखिए –

(क) मेरा _____।

(ख) मेरा _____।

शिक्षक आकलन टिप्पणी .....

.....

.....

शिक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर दिनांक : .....

भाग : ब

प्रशिक्षण उपयोगी प्रारूप

उप समूह के सदस्यों के नाम :

भाषा शिक्षण की चुनौतियाँ, कारण एवं समाधान।

विषय : पठन कौशल

कथन	कारण	प्रस्तावित समाधान
कक्षा 5 तक भी बच्चे पढ़ना नहीं जानते ।	1. 2. 3. 4.	
	1. 2. 3. 4.	

उप समूह के सदस्यों के नाम :

भाषा शिक्षण की चुनौतियाँ, कारण एवं समाधान।

विषय : लेखल कौशल

कथन	कारण	प्रस्तावित समाधान
बच्चे अपने विचारों को लिखकर व्यवस्थित रूप से अभिव्यक्त नहीं कर पाते है।	1. 2. 3. 4.	
	1. 2. 3. 4.	

उप समूह के सदस्यों के नाम :

भाषा शिक्षण की चुनौतियाँ, कारण एवं समाधान।

विषय : सुनना बोलना कौशल

कथन	कारण	प्रस्तावित समाधान
प्राथमिक स्तर के अधिकांश बच्चे अपनी बात को आत्म विश्सवास के साथ क्रमबद्ध रूप से नहीं सुना पाते हैं।	1. 2. 3. 4.	
	1. 2. 3. 4.	

उप समूह के सदस्यों के नाम :

भाषा शिक्षण की चुनौतियाँ, कारण एवं समाधान।

विषय : रचनात्मक लेखन।

कथन	कारण	प्रस्तावित समाधान
प्राथमिक कक्षाओं के बच्चे नया सृजन करने में समस्या महसूस करते हैं।	1. 2. 3. 4.	
	1. 2. 3. 4.	

स्टेट इनिशिएटिव फॉर क्वालिटी एजूकेशन
सत्र निर्माण पत्रक विषय हिन्दी

नाम :..... **पदस्थापन :**..... **जिला :**.....

सत्र की विषयवस्तु :..... समयः .....

सत्र के लिए पठन सामग्री/आलेख :.....

सत्र की पृष्ठभूमि :

उद्देश्य :

सामग्री :

सत्र संचालन गतिविधियाँ :

प्रथम चरण–

द्वितीय चरण–

तृतीय चरण–

विचारणीय बिन्दूः

समेकन :

एसआईक्यूई केआरपी 6 दिवसीय प्रशिक्षण सत्रः 2016–17

विषय हिन्दी **केआरपी समझ पत्र**

नाम :..... **पदस्थापन :**..... **जिला :**.....

1. भाषा की प्रकृति एवं शिक्षा शास्त्र

क्र. सं.	क्षेत्र	समझ की स्थिति			
		पूर्णतः समझ एवं समझाने की क्षमता	समझ है परंतु समझाने में समस्या	समझ कम और स्पष्टता की जरूरत	पुनः समझने की आवश्यकता
1	हिन्दी शिक्षण की चुनौतियाँ ।				
2	भाषा सीखने–सिखाने की प्रक्रिया।				
3	ज्ञान निर्माण में भाषा की भूमिका।				
4	हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य।				
5	बच्चे के भाषा सीखने की प्रक्रिया।				

2. पाठ्यक्रम, पाठ्यक्रम उद्देश्य एवं आकलन

क्र. सं.	क्षेत्र	समझ का स्तर			
		पूर्णतः समझ एवं समझाने की क्षमता	समझ है परंतु समझाने में समस्या	समझ कम और स्पष्टता की जरूरत	पुनः समझने की आवश्यकता
1	प्राथमिक कक्षाओं से संबंधित पाठ्यक्रम।				
2	की स्टेज वाईज विशिष्ट क्षमताओं, उनके उद्देश्य आदि की समझ।				
3	कौशलवार बुनियादी क्षमताएं।				
4	भाषा शिक्षण के व्यापक उद्देश्य।				
5	भाषा शिक्षण के सामान्य उद्देश्य।				
6	पाठ्यक्रम, पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य, एवं आकलन के सूचकों के मध्य संबंध।				
7	हिन्दी भाषा के पाठ्यक्रम के अनुरूप विषयवस्तु का चयन करने की समझ				

नाम :..... पदस्थापन :..... जिला :.....

3. कक्षा–कक्षीय प्रक्रियाएं , शिक्षण आकलन योजना एवं क्रियान्वयन

क्र. सं.	क्षेत्र	समझ का स्तर			
		पूर्णतः समझ एवं समझाने की क्षमता	समझ है परंतु समझाने में समस्या	समझ कम और स्पष्टता की जरूरत	पुनः समझने की आवश्यकता
1	भाषा में बालकेन्द्रित शिक्षण प्रक्रिया				
2	विद्यार्थी केन्द्रित कक्षा की संरचना				
3	गतिविधि आधारित शिक्षण				
4	आकलन को सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के रूप में समझना				
5	शिक्षण एवं आकलन योजना व तैयारी				
6	बच्चों के साथ समग्र शिक्षण की समझ				
7	कक्षा में सभी स्तरों के बच्चों के साथ करने की समझ				
8	कक्षा में उपसमूह निर्माण एवं कार्य योजना की समझ				
9	सतत् समर्थन एवं आकलन की समझ				

4. हिन्दी भाषा शिक्षण प्रक्रियाएं

क्र. सं.	क्षेत्र	समझ का स्तर			
		पूर्णतः समझ एवं समझाने की क्षमता	समझ है परंतु समझाने में समस्या	समझ कम और स्पष्टता की जरूरत	पुनः समझने की आवश्यकता
1	प्राथमिक कक्षा में हिन्दी शिक्षण प्रक्रिया की समझ				
2	योजना की क्रियान्विति व बच्चों के स्तर के अनुसार शिक्षण कार्य कर पाना।				
3	सहायक शिक्षण सामग्री का निर्माण व उपयोग।				
4	शिक्षण प्रक्रिया के दौरान आकलन प्रक्रिया ।				
5	विभिन्न प्रकार से कार्य करने के तरीकों की समझ				
6	हिन्दी भाषा की विधाओं पर काम कराने की समझ				

नाम : ..... पदस्थापन : ..... जिला : .....

5. हिन्दी भाषा कहानी व खेल का इंटिग्रेशन

क्र. सं.	क्षेत्र	समझ का स्तर			
		पूर्णतः समझ एवं समझाने की क्षमता	समझ है परंतु समझाने में समस्या	समझ कम एवं और स्पष्टता की जरूरत	पुनः समझने की आवश्यकता
1	भाषाई कौशलों के विकास में खेल के महत्त्व की समझ				
2	खेलों के माध्यम से अवधारणाओं को किस प्रकार से सिखाया जा सकता है उस ओर विचार की समझ				
3	बच्चों की सक्रियता और ध्यानकेन्द्रण की स्थिति के लिए खेलों के योगदान की समझ				
4	कहानी पर काम करने के तरीकों को समझना।				
5	कहानी की तरह ही अन्य भाषाई विघाओं के तरीकों को सममझना।				

6. हिन्दी भाषा में सतत् आकलन, आकलन टूल एवं अभ्यास पत्रक

क्र. सं.	क्षेत्र	समझ का स्तर			
		पूर्णतः समझ एवं समझाने की क्षमता	समझ है परंतु समझाने में समस्या	समझ कम एवं और स्पष्टता की जरूरत	पुनः समझने की आवश्यकता
1	भाषा शिक्षण में रचनात्मक आकलन की प्रक्रिया				
2	आकलन के प्रकार व तरीकों की समझ				
3	आकलन के लिए अभ्यास पत्रक के निर्माण की समझ				
4	योगात्क आकलन टूल्स के लिए ब्ल्यू प्रिंट को बनाना।				
5	आकलन की व्यापकता की समझ।				
6	आकलन के लिए अभ्यासपत्रक के निर्माण की समझ				
7	सतत् आकलन प्रक्रिया से शिक्षण को नियोजित करने की समझ				
8	कार्य पत्रक की जांच एवं फीड बैक की समझ				
9	उद्देश्य एवं आकलन सूचकों को जोड़कर देखने की समझ				
10	प्रश्नों का नियोजन एवं गतिविधि आधारित कार्य पत्रक की समझ				

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व–संपन्न**
समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य
बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए, तथा उन सब में
व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **वंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई0 (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

स्टेट इनिशिएटिव फॉर क्वॉलिटि एज्यूकेशन

आदर्श विद्यालय योजना–माध्यमिक शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार

सार्वजनिक विद्यालयों में
बालकेन्द्रित शिक्षा–शास्त्र,
सतत समग्र आकलन पद्धति एवं
सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से
सभी बच्चों की
समान गुणवत्तायुक्त प्राथमिक शिक्षा में
सफलता सुनिश्चित करने का संकल्प

An Endeavor to Ensure
Successful Completion of
Quality Primary Education
for all Children in Govt. Schools
through the approaches
of child centered pedagogy,
continuous & comprehensive assessment
and community participation

सब बच्चे अच्छा सीख सकते है
सभी शिक्षक अच्छा सिखा सकते है।

RCSE

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा परिषद्

डॉ. राधाकृष्णन् शिक्षा संकुल,
ब्लॉक-6, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर-302017